

2

राजनीतिक विकास [Political Development]

- ♦ विकास शब्द अर्थशास्त्र की देन है। जहाँ विकास (Development) का संबंध अर्थशास्त्र से है; वही राजनीति विकास (Political Development) का संबंध राजनीति विज्ञान से है।
- ♦ साधारण शब्दों में लोकतंत्र का विकास, नागरिकों की बढ़ती राजनीतिक सहभागिता, राजनीतिक व लोकतांत्रिक संस्थाओं की बढ़ती संख्या, जागरूकता में वृद्धि, स्वतंत्र संचार व अधिकारों की व्यवस्था आदि को राजनीतिक विकास का पर्याय कहा जा सकता है।
- ♦ **फ्रेड.डब्ल्यू. रिग्स** (The Theory of Political Development) - तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में राजनीति विकास उपागम आंदोलन को जिसने अधिक प्रेरणा दी, वह तीसरे विश्व के विकासशील देशों में राजनीतिक प्रवृत्तियों के अध्ययन पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाना है। इस प्रवृत्ति का प्रारम्भ 1955 में **राय सी. मैक्रिडिस** (Ray C. Macridis) ने किया।
- ♦ विकासशील देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं में जो बदलाव होते हैं, उनकी विकास की प्रक्रिया के रूप में समझने के लिए राजनीतिक विकास उपागम प्रस्तुत किया गया। राजनीतिक विकास की अवधारणा मुख्य रूप से उदारवादी परंपरा से आई है। इस परंपरा में पश्चिमी उदार लोकतंत्र को एक विकसित समाज का आदर्श मॉडल माना जाता है।
- ♦ राजनीतिक विकास उपागम की आवश्यकता (The Necessity of Political Development Approach):-
 - गैर-पश्चिमी देशों में किस प्रकार का राष्ट्रवाद पनप रहा है।
 - राष्ट्र निर्माण की प्रक्रियाओं में राजनीतिक अभिवृत्तियों और व्यक्तिगत व्यवहार ने क्या भूमिका अदा की है।
 - ये राज्य राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर किस प्रकार के असमंजस का सामना कर रहे हैं।
 - इनके राजनीतिक विकास में नौकरशाही या सेना या धर्म ने क्या भूमिका अदा की है।
 - इन देशों में संवैधानिक लोकतंत्रों की अवनति क्यों हुई?
 - आर्थिक पिछड़ेपन ने राजनीति की प्रकृति को किस प्रकार प्रभावित किया है।
- ♦ **विकासशील राज्यों में राजनीतिक विकास की समस्याएँ-**
 - राजनीतिक विकास के मॉडल के चयन की समस्या।
 - राजनीतिक स्थायित्व की समस्या।
 - संरचनात्मक व्यवस्थाओं की सुस्थिर स्थापना की समस्या।
 - राजनीतिक विकास के अभिकरण - राजनीतिक दल, हित और दबाव समूहों के समुचित रूप में संगठित और विकसित होने की समस्या।
 - हिंसात्मक राजनीतिक की समस्या।

राजनीतिक विकास उपागम के उदय के कारण:-

1. संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक, सामाजिक प्रक्रिया और तुलनात्मक इतिहास-ये तीनों ही उपागम राजनीतिक विकास को ठीक से समझाने में सक्षम नहीं थे। ये राजनीतिक विकास के लिए कोई स्पष्ट और उपयोगी ढांचा (संयोजना) नहीं दे पाए, इसलिए एक ठोस सिद्धांत का विकास भी नहीं हो सका।

हंटिंगटन ने इन तीनों उपागमों की कमियों को इस तरह समझाया-

- संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम राजनीतिक परिवर्तन को समझने में कमजोर था।
- सामाजिक प्रक्रिया उपागम राजनीति के अध्ययन के लिए पर्याप्त नहीं था।
- तुलनात्मक इतिहास उपागम सिद्धांत निर्माण के लिए कमजोर था।

इसी कारण तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में नए विचारों पर ध्यान दिया गया, जैसे-

- राजनीतिक विकास,
- राजनीतिक आधुनिकीकरण,
- राजनीतिक संस्कृति,
- और मार्क्सवादी-लेनिनवादी उपागम।

इन नए उपागमों से विकासशील देशों की राजनीति को बेहतर ढंग से समझने का प्रयास किया गया।

2. डेविड ईस्टन का 'सामान्य व्यवस्था सिद्धांत' (System Theory or Input-Output Theory) तथा आमण्ड का 'संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम' विकासशील देशों के अध्ययन के दावे के बावजूद विकसित पाश्चात्य देशों के अध्ययन तक ही सीमित हो गए। क्योंकि इन दोनों का पूरा ध्यान व्यवस्था अनुरक्षण (Maintenance) व स्थायीत्व पर है जबकि विकासशील देशों में पूरी व्यवस्था को ही बदलने की आवश्यकता है।

3. स्टीफन क्लार्कसेन का 'मार्क्सवादी- लेनिनवादी उपागम' केवल साम्यवादी देशों के अध्ययन में उपयोगी है।

- ♦ ऐसे में तृतीय विश्व (Third World) के देशों की राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए राजनीतिक विकास सिद्धांत का उदय हुआ।
- राजनीतिक विकास के सम्बन्ध में सिद्धान्त निर्माण की प्रक्रिया का प्रारम्भ प्रायः 1960 से माना जाता है, जब आमण्ड और कोलमैन की 'The Politics of Developing Areas' नाम की प्रसिद्ध पुस्तक का प्रकाशन हुआ। परन्तु, वास्तव में इस पुस्तक का सम्बन्ध राजनीतिक विकास से उतना नहीं है जितना कि तुलनात्मक राजनीति से। तुलनात्मक राजनीति के विश्लेषण के लिए इस पुस्तक में एक व्यवहारपरक और व्यवस्थावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। इसमें राजनीतिक विकास की संकल्पना अथवा उसके सिद्धान्तों के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा गया।
- नव-स्वतंत्र देशों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन की शुरुआत रॉय सी. मैक्रिडिस और ब्राउन ने की। उनकी पुस्तक "The Study of Comparative Government" (1955) में इन देशों की राजनीतिक व्यवस्थाओं का विश्लेषण किया गया।
- राजनीतिक विकास के अध्ययन हेतु पहला महत्वपूर्ण प्रयास डेनियल लर्नर ने अपनी पुस्तक "The passing of Traditional Society: Modernizing middle East (1958)" में किया। इसमें उन्होंने परंपरागत समाज से आधुनिक समाज की ओर होने वाले परिवर्तन का अध्ययन किया।

- Social Science Research Council (SSRC) की स्थापना 1923 में हुई थी और इसके संस्थापक अध्यक्ष चार्ल्स मेरियम थे। बाद में 1954 में, SSRC के अंतर्गत गेब्रियल आमण्ड की अध्यक्षता में तुलनात्मक राजनीति की समिति (CCP) का गठन किया गया।
- राजनीतिक विकास के क्षेत्र में सिद्धान्त की खोज का काम वास्तव में तब आरम्भ (1954-1963) हुआ जब गेब्रियल आमण्ड की अध्यक्षता में 'तुलनात्मक राजनीति की समिति', 1954 (Committee on Comparative Politics) की स्थापना की गयी, जिसका उद्देश्य राजनीतिक विकास और उससे सम्बन्धित अध्ययनों के क्षेत्र में काम करने वाले प्रमुख लेखकों को एकत्रित करना था। 1963 और 1966 के बीच में इस समिति के तत्वाधान में तुलनात्मक राजनीति की समिति से प्रिंसटन विश्वविद्यालय प्रेस से राजनीतिक विकास के विभिन्न पक्षों पर छः ग्रन्थ प्रकाशित किये, जिनका सम्बन्ध संचार, लोक सेवा, राजनीतिक आधुनिकीकरण, शिक्षा, राजनीतिक संस्कृति व राजनीतिक दल व्यवस्था आदि विषयों से था।

प्रिंसटन विश्वविद्यालय प्रेस के राजनीतिक विकास विषय पर प्रकाशित छह प्रसिद्ध ग्रन्थ -

- (1) Communication and Political Development (1963) - संपादक- लुसियन पाई
 - (2) Bureaucracy and Political Development (1963) - ला पालोम्बरा
 - (3) Education and Political Development (1965) - कॉलमैन
 - (4) Political Culture and Pol. Development (1965) - लुसियन पाई व सिडनी वर्बा
 - (5) Political Parties and Political Development (1965) - ला पालोम्बरा व मायरन वीनर
 - (6) Political Modernization in Japan and Turkey (1964) - रॉबर्ट ई. वार्ड व ए. रस्टौव (Ward and Rustow)
- ♦ इस राजनीतिक विकास सिद्धांत (Political Development Theory) का उदय 1960-1970 के मध्य प्रिंसटन विश्वविद्यालय (USA) में हुआ।
 - ♦ 1960 के आसपास, कई प्रमुख विद्वानों ने विकासशील देशों की राजनीति का गहराई से अध्ययन किया। इन सभी विद्वानों पर आमण्ड और कोलमैन की पुस्तक 'The Politics of the Developing Areas' (1960) में प्रस्तुत संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक मॉडल का गहरा प्रभाव था।

विकासशील देशों पर प्रमुख विद्वानों के अध्ययन

(i). घाना, युगाण्डा

- विद्वान: डेविड एप्टर

पुस्तकें:

- Ghana in Transition (1963)
- The Political Kingdom of Uganda: A Study in Bureaucratic Nationalism (1961)

(ii). ईरान, पाकिस्तान

- विद्वान: लियोनार्ड बाइंडर (Leonard Binder)

पुस्तकें:

- Iran: Political Development in a Changing Society (1962)
- Religion and Politics in Pakistan (1961)

(iii). नाइजीरिया

- विद्वान: जेम्स एस. कोलमैन

पुस्तक:

- Nigeria: Background to Nationalism (1959)

(iv). इंडोनेशिया

- विद्वान: हर्बर्ट फीथ

पुस्तक:

- The Decline of Constitutional Democracy in Indonesia (1962)

(v). इटली

- विद्वान: जोसेफ ला पालोम्बारा

पुस्तक:

- Interest Groups in Italian Politics (1964)

(vi). बर्मा (म्यांमार)

- विद्वान: लूसियन पाई

पुस्तक:

- Politics, Personality and Nation-Building: Burmas Search for Identity (1966)

(vii). थाईलैण्ड

- विद्वान: एफ. डब्ल्यू. रिग्स

पुस्तक:

- Thailand: The Modernization of a Bureaucratic Polity (1966)

(viii). भारत

- विद्वान: माथरन वीनर

पुस्तक:

- The Politics of Scarcity: Public Pressure and Political Response in India (1962)

(ix). श्रीलंका (सीलोन)

- विद्वान: डब्ल्यू. हावर्ड रिगिन्स (Wriggins)

पुस्तक:

- Ceylon: Dilemmas of a New Nation (1960)

- ♦ हालांकि इन सब विचारकों ने तीसरी दुनिया (Third World) के देशों का अध्ययन किया है, पर इनका राजनीतिक विकास को देखने का नजरिया 'पूँजीवादी उदारवादी' है।
- ♦ विण्डर/बिंडर का मानना है कि राजनीतिक विकास राष्ट्रीय राज्य का प्रचालक या संघटक है।

राजनीतिक विकास तथा राजनीतिक पतन के लक्षण

सकारात्मक (विकास) लक्षण

- प्रादेशिक अखण्डता
- राष्ट्रीय एकीकरण
- मताधिकार में वृद्धि तथा स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव
- राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि
- राजनीतिक दलों तथा दबाव समूहों की प्रभावशाली भूमिका
- जनसंचार माध्यम के अभिकरणों की स्वतंत्रता
- न्यायपालिका की स्वतंत्रता
- सार्वजनिक सेवाओं की तटस्थता
- सुरक्षा सेनाओं का अराजनीतिकरण
- स्थानीय शासन की स्वायत्तता
- विधायिका की प्रभावशाली भूमिका
- असहमति के प्रति सहनशीलता
- शक्तियों का विकेन्द्रीकरण
- जनता के प्रति शासन का उत्तरदायित्व
- निर्णय लेने की प्रक्रिया में जनता की भागीदारी
- कानून का शासन
- राजनीतिक संस्कृति का लौकिकीकरण

नकारात्मक (पतन) लक्षण

- चुनावों में हेराफेरी
- उग्र व हिंसात्मक प्रदर्शन
- भूमिगत एवं आतंकवादी तत्वों द्वारा निरंतर उपद्रव
- राजनीतिक दल-बदल
- राजनीतिक दलों तथा दबाव समूहों का विघटन
- असहमति या विरोध का दमन या उस पर कठोर प्रतिबंध
- शासकों की पूजा या उनकी अंध प्रशंसा
- सरकारी विचारधारा का गुणगान
- राजनीतिक हत्याएँ
- सुरक्षा सेनाओं का राजनीतिकरण
- नौकरशाही की प्रतिबद्धता
- भ्रष्टाचार एवं कुव्यवस्था का फैलाव
- शक्तियों का केन्द्रीकरण
- व्यापक स्तर पर मनमानी गिरफ्तारियाँ तथा विपक्षी नेताओं की नजरबंदी
- राज्य के आंतरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप
- कानून के शासन का अभाव

- ♦ राजनीतिक विकास उपागम के अन्य नाम-

- (1) **संकल्प एवं सामर्थ्य** (Will and capacity) दृष्टिकोण - हैल्परन
- (2) **संस्थागत संयोजना** (Institutional Framework) - आइजेनस्टैंड
- आइजेनस्टैंड ने राजनीतिक विकास को ऐसी संस्थागत संयोजना (Institutional Framework) व्यवस्था माना, जिसमें बदलावों को अपनाने और उनके अनुसार ढलने की लगातार क्षमता होती है।
- (3) **संस्थाकरण** (Institutionalization) - सेमुअल पी. हण्टिंगटन

- जब समाज में आधुनिकीकरण होता है और राजनीतिक प्रजातंत्र विकसित होता है, तो राजनीतिक विकास स्वतः आ जाता है।
- यानि राजनीतिक विकास को अन्य परिवर्तनों का परिणाम माना जाता है।

समर्थक विद्वान:

- | | | |
|--------------|------------------|--------------------|
| • बर्गेस | • एस. एम. लिपसेट | • रिगिन्स |
| • कोलमैन | • कार्ल डॉयच | • विलियम कार्नहॉसर |
| • मायरन वीनर | • आमण्ड | • सिडनी वर्बा |
| • लूसियन पाई | | |

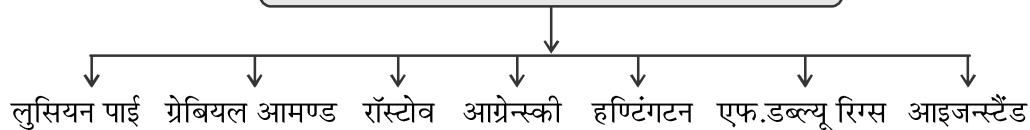
(2). स्वतंत्र तथा मध्यवर्ती परिवर्त्य (Independent & Intermediary Variable)

- इस दृष्टिकोण के अनुसार राजनीतिक विकास केवल परिणाम नहीं है, बल्कि यह स्वयं अन्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों का कारण भी बनता है।
- यानी राजनीतिक विकास को एक सक्रिय और प्रभाव डालने वाला तत्व माना जाता है।
- यह दृष्टिकोण मुख्यतः 1965 के बाद विकसित हुआ।

समर्थक विद्वान:

- डाइमेन्ट
- आइजनस्टेण्ड
- रजनी कोठारी - The Politics of India (1970)
- हेल्पर्न
- हर्शमैन

राजनीतिक विकास सिद्धान्त में हम निम्नलिखित विद्वानों के विचारों का अध्ययन करेंगे



लुसियन पाई :-

- ♦ राजनीतिक विकास सिद्धांत का पिता - लुसियन पाई।
- ♦ पुस्तक - Aspects of Political Development (1966)
 - Political Culture and Political Development (1965) - लुसियन पाई व सिडनी वर्बा
 - Communication and Political Development (1963)
- ♦ “राजनीतिक विकास, संस्कृति का फैलाव (Difussion) तथा जीवन के पुराने प्रतिमानों (Models) को नयी मांगों के अनुरूप ढालना है।” - लुसियन पाई

- ◆ पाई ने यह विचार व्यक्त किया था कि राजनीतिक विकास का अर्थ “सांस्कृतिक प्रसार और जीवन में पुराने प्रतिमानों को नयी मांगों के साथ अनुकूलित, सम्बन्धित और समयोजित करना’ था। राजनीतिक विकास की दिशा में पहला कदम राष्ट्रवाद पर आधारित राज्य व्यवस्था (Nation-State) का विकास करना था।
- ◆ यह पाई की शुरुआती परिभाषा है बाद में इसे वापिस ले लिया।
- ◆ राजनीतिक विकास क्या है? इस संदर्भ में लुसियन पाई द्वारा विभिन्न दृष्टिकोणों की आलोचना व राजनीतिक विकास की पूर्व शर्तों की चर्चा की गई:-
 - (1) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **आर्थिक विकास** - पॉल बारान, नार्मन एस. बुकानन
 - पाई को इसमें चार दोष दिखाई देते हैं-
 1. नकारात्मक स्वरूप
 2. सम्मान समुच्चय पर ध्यान केन्द्रित नहीं
 3. गरीब देशों की आर्थिक विकास की संभावनाओं पर कुठाराघात।
 4. विकासशील देशों में बौद्धिक प्रगति की बजाय अन्य बातें अधिक महत्वपूर्ण होती है।
 - (2) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **औद्योगिक विकास** - डब्ल्यू.डब्ल्यू. रॉस्टॉव
 - (3) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **राजनीतिक आधुनिकीकरण** - कॉलमैन, लिप्सेट, डेविड एक्टर, गुनार मिर्डल
 - (4) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **प्रशासनिक व कानूनी विकास** - मैक्स वेबर, पार्सन्स, ए.एम. हैडरसन
 - (5) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **लोकतंत्र** - लॉ पालोम्बरा, जे. रोन्लड, पेन्नक
 - (6) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **राष्ट्र-राज्य बनना** - एडवर्ड शिल्स, के.एच. सिल्वर्ट, विलियम मैक्कोर्ड
 - (7) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **स्थायीत्व व व्यवस्थाबद्ध परिवर्तन** - एफ.डब्ल्यू. रिग्स व कार्ल डॉयच
 - (8) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **सार्वजनिक लामबन्दी और सहभागिता** - क्लिफर्ड गीर्ज, रूपर्ट एमर्सन, बर्ट एस. होजलिट्ज, आइजेन्स्टाइन। व्यर्थ का सम्वेदनावाद व भ्रष्ट जनोतेजक राजनीति खतरों से खाली नहीं होती। ये दोनों किसी भी समाज को उसकी व्यवस्था व शक्ति से वंचित कर सकती है।
 - (9) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **लामबन्दी और सत्ता** - जेम्स एस. कोलमैन, जी.ए. आमण्ड व टालकट पार्सन्स
 - (10) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **सामाजिक परिवर्तन की बहुआयामी प्रक्रिया** - मैक्स एफ. मिलिकान, डोनाल्ड एल.एम. ब्लैकमेर, डैनियल लर्नर। लुसियन पाई इसकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि विकास के विभिन्न रूप आपस में संबंधित है।
 - (11) राज. विकास की पूर्व शर्त है - **अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की भावना** - जैम्स एस. कोलमैन और माइरन वीनर। पाई इसका आलोचनात्मक परीक्षण नहीं करते। इससे यह लगता है कि वे या तो इसे पूर्ण रूप से स्वीकार करते हैं अथवा उपेक्षा करते हैं।
- आमण्ड, कोलमैन, आयन्स्टैड और कोर्न होजर ने राजनीतिक विकास को सामाजिक परिवर्तन की बहुदिशायुक्त प्रक्रिया के एक पहलू के रूप में विवेचित किया।

- ★ **‘परिभाषित प्राथमिकताओं की समस्या’ (Problem of Definitional Priorities) - जे.बी. नेटल (Nettle)**
- ◆ लुसियन पाई इन्हें **‘परिभाषा का संकट’** या **‘अर्थ/परिभाषा का भ्रम’ (Semantic Confussion)** कहता है तथा परिभाषा की बजाय वह राजनीति विकास के कुछ लक्षण बताता है जिसके लिए वह एक विशेष शब्द **‘विकास संलक्षण’ (Development Syndrom)** प्रयुक्त करता है।
- ◆ पाई के अलावा **कोलमैन** भी राजनीतिक विकास में **‘विकास संलक्षण’ (Development Syndrome)** की ओर संकेत करते हैं।
- ◆ लुसियन पाई का विचार था कि किसी भी विकासशील व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए उसमें समानता, क्षमता और विभेदीकरण की इन तीन विशेषताओं की खोज करनी चाहिए और जिन मात्राओं में इन विशेषताओं का विकास हुआ है, उसी अनुपात में उसके विकास की स्थिति को आंका जाना चाहिए। इस प्रकार **‘विकास संलक्षण’ का संबंध लुसियन पाई व कोलमैन दोनों से है।**

राजनीतिक विकास के तीन संलक्षण - लुसियन पाई

समानता (Equality)	क्षमता (Capacity)	विभेदीकरण (Differentiation)
- राजनीतिक संस्कृति से संबंधित - कानून, समाज, राजनीति के	- कार्य निष्पादन (Output) से संबंधित - कार्य कुशलता- कार्य निष्पादन व मांगों की पूर्ति की क्षमता।	- राजव्यवस्था के गठन की प्रकृति अथवा संरचनाओं के सन्दर्भ में
समक्ष समानता - सम्पूर्ण जनता के सन्दर्भ में	- प्रशासन व राजव्यवस्था की उपलब्धियों के स्तर के सन्दर्भ में	1. शक्ति-पृथक्करण 2. कार्य-विशेषीकरण (Specialization) 3. प्रकार्यात्मक दृष्टि से कार्य विभाजन 4. समाकलन (Integration) में बढ़ोतरी
1. राजनीतिक समता 2. योग्यता के आधार पर चयन की समता 3. विधिक समता 4. अवसर की समता	1. कार्य निष्पादन व कार्यकुशलता 2. कानून एवं व्यवस्था (Law and Order) 3. मांगों की पूर्ति	

- ◆ लेकिन अक्सर ये तीनों बातें आपस में आसानी से मेल नहीं खातीं। इनके बीच गंभीर तनाव भी पैदा हो सकता है।
 - अधिक समानता की माँग (जैसे सबको बराबर अधिकार और सुविधाएँ) कभी-कभी व्यवस्था की कार्यक्षमता पर दबाव डाल देती है।
 - वहीं दूसरी ओर, विशेष योग्यता, गुण और विशेषज्ञ ज्ञान व विभिन्नीकरण को महत्व देने से असमानता बढ़ सकती है, क्योंकि सब लोग समान स्तर पर नहीं होते।
- ◆ इस तरह समानता, क्षमता व विभिन्नीकरण के बीच टकराव बना रहता है।
- ◆ लुसियन पाई के अनुसार, राजनीतिक विकास की शुरुआत राष्ट्रवाद पर आधारित **राष्ट्र-राज्य (Nation-State) के निर्माण** से होती है। जब एक मजबूत राष्ट्र-राज्य बनता है, तभी धीरे-धीरे ऐसी राजनीतिक संस्कृति विकसित होती है, जिसे उन्होंने विश्व-संस्कृति कहा है, और जो समय के साथ सभी समाजों में फैल सकती है।

राजनीतिक विकास के छः (6) संकट

- ♦ लुसियन पाई ने अपनी पुस्तक 'Aspect of Political Development' (1966) में ब्रिटेन के विकास का राजनीतिक विश्लेषण करते समय छः संकट बताये। इन्हें विकास की क्रमशः छः अवस्थाएँ माना जा सकता है।
- ♦ लुसियन पाई के अनुसार - प्रत्येक राजनीति व्यवस्था के सामने निम्नलिखित छः संकट आते हैं, अगर कोई राजनीतिक व्यवस्था इन संकटों से निपट लेती है तो वहाँ राजनीतिक विकास हो जाता है।
- ♦ संकट के उदाहरण पाई ने यूके (ब्रिटेन) से लिए हैं।
- (1) आत्म परिचय/देशभक्ति का संकट या पहचान का संकट (Identity Crisis)- देश की बजाए धर्म, वंश जाति, भाषा को प्राथमिकता अर्थात् राष्ट्रप्रेम का अभाव।
- (2) वैधता का संकट अथवा औचित्यपूर्णता का संकट (Legitimacy Crisis)- सत्ता को जनसहमति प्राप्त नहीं होना।
- (3) प्रविष्टि/अन्तः प्रवेश का संकट (Insertion/Penetration)- तृणमूल स्तर (Grass Root) तक लोकतंत्र का विस्तार न होना।
- (4) भागीदारी/सहभागिता का संकट (Participation)- राजनीतिक गतिविधियों, नियम-निर्माण व क्रियान्वयन में जनभागीदारी व साझेदारी का अभाव।
- (5) एकीकरण का संकट (Integration/Unification)- विभिन्न गुटों व समूहों की मांगों के मध्य सामंजस्य व एकीकरण न होना।
- (6) वितरण का संकट (Distribution)- संसाधनों, पदों, अधिकारों व सम्मानों का सही वितरण न होना। अमेरिका (USA) में अश्वेत व भारत में दलित जातियाँ आज भी संसाधन वितरण से वंचित हैं।
- ★ लियोनार्ड बाइण्डर (Leonard Binder) -
- ♦ बाइण्डर ने अपनी पुस्तक 'Crisis and Sequences in Political Development' (1971) में राजनीतिक विकास के चार संकट बताये -
 1. पहचान का संकट
 2. वैधता का संकट
 3. अन्तः प्रवेश का संकट (Insertion)
 4. राजनीतिक सहभागिता का संकट
- ♦ बाइण्डर मानते हैं कि इन संकटों का समाधान हुआ या नहीं, इसका फैसला शासक वर्ग करता है। वे इस बात पर अधिक ध्यान नहीं देते कि इन समाधानों की कीमत जनता को कितनी चुकानी पड़ी।

जे.पी. नेटल (J.P. Nettle)

- जे. पी. नेटल के अनुसार राजनीतिक विकास को परिभाषित करना आसान नहीं है, क्योंकि इसमें कई तरह की समस्याएँ आती हैं।
- अपनी पुस्तक Strategies in the Study of Political Development (1969) में उन्होंने बताया कि राजनीतिक विकास कोई एक-पक्षीय या सीमित प्रक्रिया नहीं है।
- नेटल के अनुसार राजनीतिक विकास बहुत व्यापक और बहुपक्षीय विषय है, जिसमें समाज, राजनीति, संस्थाएँ, मूल्य और व्यवहार-सब शामिल होते हैं।

नेटल की चार अपेक्षाएँ

- (1) अंतःसंबंधी विश्व : आज की दुनिया में सभी देश एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसलिए विकास का अध्ययन केवल एक विषय तक सीमित नहीं है, बल्कि कई विषयों को साथ लेकर किया जाता है।

- (2) **स्थायित्व और अस्थायित्व** : राजनीतिक विकास का मतलब केवल स्थिरता या आगे बढ़ना ही नहीं है। इसमें व्यवस्था का कमजोर होना, गिरावट (क्षय) और अस्थिरता भी शामिल हो सकती है।
- (3) **जनसंख्या** : विकास का अध्ययन करते समय जनसंख्या वृद्धि पर विशेष ध्यान देना जरूरी है, क्योंकि जनसंख्या विस्फोट के गंभीर सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव पड़ते हैं।
- (4) **नस्ल / जातीय विकास** : नस्लीय या जातीय विकास के सिद्धांत समाज में मौजूद जातीय भेदभाव और टकराव को समझने और उन्हें सुलझाने का प्रयास करते हैं।

राजनीतिक विकास की परिभाषा संबंधी चार समस्याएँ:- जे.पी. नेटल

- (i) परिभाषा की प्राथमिकता (Priority) की समस्या
- (ii) मूल्यों की समस्या
- (iii) विकसित व विकासशील समाजों के दो वर्गों के आपसी संबंधों की समस्या।
- (iv) विकास की कोटि अवस्था (Rank of order) की मान्यता की समस्या।

ग्रेबियल आमण्ड

पुस्तकें:-

1. Politics of Developing Areas (1960) (आमण्ड - कॉलमैन)
 2. Comparative Politics : A Developmental Approach (1966) (आमण्ड - पॉवेल)
- ♦ “राजनीतिक विकास का तात्पर्य भूमिका विभिन्नीकरण व संस्कृति का लौकिकीकरण” है। - आमण्ड

राजनीतिक विकास के तीन लक्षण- आमण्ड एवं पॉवेल
Comparative Politics : A Developmental Approach (1966)

संस्कृति का लौकिकीकरण (Secularisation of Culture)	उपव्यवस्था स्वायत्तता	भूमिकाओं का विभिन्नीकरण
- इसका तात्पर्य है - राजनीतिक गतिविधियों में व्यक्ति द्वारा विभेदीकरण, अनुभवशीलता व विश्लेषणात्मक का उपयोग। - लौकिकीकरण - राजनीतिक विकास को राजनीतिक संस्कृति के साथ जोड़ता है। - यह धर्म निरपेक्षता से जुड़ी अवधारणा है। - व्यवस्था अनुरक्षण व अनुकूलन हेतु आवश्यक। - जनता के संदर्भ में।	- उपव्यवस्था में राजनीतिक दल, दबाव समूह व मीडिया शामिल है। - सत्ता का विकेन्द्रीकरण ताकि क्षमता बढ़े। - इससे राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता (Capacity) बढ़ती है। - व्यवस्था का सामर्थ्य बढ़ता है।	- लुसियन पाई विभेदीकरण में ‘संरचनात्मक उपागम’ का प्रयोग करता है जब कि आमण्ड भूमिका विभिन्नीकरण में ‘प्रकार्यात्मक उपागम’ का प्रयोग करता है। - प्रकार्य में संरचना व उनके कार्य दोनों आते हैं। - संरचनाएँ ही नहीं उनके कार्य भी अलग-अलग हों - जनवादी चीन की राजनीतिक संरचनाओं पर साम्यवादी दल का प्रभुत्व है; वहाँ ‘संरचनाएँ’ तो अलग-अलग हैं, पर उनके कार्य नहीं। - रूपांतरण स्तर

लुसियन पाई — (समानता) ————— (क्षमता) ————— (विभेदीकरण)

- आमण्ड व पॉवेल के अनुसार- तीनों लक्षण आपस में जुड़े हुए हैं। इसलिए राजनीतिक विकास तभी होगा जब तीनों एक साथ होंगे।
- आमण्ड ने पॉवेल के साथ, विभिन्न चयनित राजव्यवस्थाओं का, आदिमकाल से लेकर वर्तमान तक, विकासात्मक विश्लेषण किया है।
- वह अपने इस ‘विकासात्मक उपागम’ (Development Approach) को ‘सम्भाव्यात्मक’ (Probabilistic) भी कहता है।

राजनीतिक व्यवस्थाओं के प्रकार:-

- सामान्यतया राजनीतिक व्यवस्थाएँ तीन वर्गों में बाँटी गयी हैं। उन्हें राजनीतिक विकास और परिवर्तन की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। यथा:-
- **प्रथम वर्ग - अन्तर्विरामी (Intermittent) राजनीतिक संरचनाएँ -**
 - इनमें संरचनात्मक विभिन्नीकरण न्यूनतम मात्रा में होता है। उनकी संस्कृति **विसृत व संकुचित (Parochial)** होती है। ये **आदिम व्यवस्थाएँ** कहलाती हैं।
- **द्वितीय वर्ग - विभेदीकृत (Differentiated) शासनीय-राजनीतिक संरचनाएँ -**
 - इनमें विभिन्नीकृत संरचनाओं के साथ-साथ **‘प्रजाभावी’ (Subject)** संस्कृति होती है। ये **परम्परागत व्यवस्थाएँ** कही जाती हैं।
- **तृतीय वर्ग - विभेदीकृत राजनीतिक अन्तर्संरचनाएँ (Differentiated Political Infra-Structures) -**
 - इनमें विशेषीकृत एवं विभिन्नीकृत संरचनाओं (राजनीतिक दल, हित समूह व जन-संचार) के साथ-साथ **‘सहभागी’** राजनीतिक संस्कृति होती है। इन्हें **‘आधुनिक व्यवस्थाएँ’** बताया गया है।
- इस प्रकार संरचनात्मक विभिन्नीकरण तथा सांस्कृतिक लौकिकीकरण की मात्रा के अनुसार आमण्ड एवं पॉवेल ने राजनीतिक व्यवस्थाओं का व्यापक वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है:-
 - I. आदिम व्यवस्थाएँ (Primitive Systems) - अन्तर्विरामी अथवा आवर्तक राजनीतिक संरचनाएँ।
 - II. परम्परागत व्यवस्थाएँ (Traditional Systems) - विभिन्नीकृत/विभेदीकृत शासनीय राजनीतिक संरचनाएँ।
 - III. आधुनिक व्यवस्थाएँ (Modern Systems) - विभिन्नीकृत राजनीतिक संरचनाएँ।

आमण्ड व पॉवेल का राजनीतिक व्यवस्थाओं का वर्गीकरण-

पुस्तक - Comparative Politics : A Developmental Approach (1966)

वर्गीकरण का आधार - संरचनात्मक विभेदीकरण (Structural Differentiation) व संस्कृति का लौकिकीकरण

तीन प्रकार की राजव्यवस्थाएँ

**1. आदिम व्यवस्थाएँ
(Primitive Systems)**

विशेषता -

- आवर्तक (Intermittent) राजनीतिक संरचनाएँ
- आवर्तक- रूक-रूक कर, निरंतरता में रूकावट
- (A) आदिम जत्थे - एस्कीमों
- (B) खण्डित व्यवस्थाएँ - दक्षिण सूडान
- (C) पिरामिडीय - घाना के अशांति क्षेत्र (Ashanti)

**2. परम्परागत व्यवस्थाएँ
(Traditional Systems)**

विशेषता-

- विभेदीकृत शासकीय राजनीतिक व्यवस्थाएँ (Differentiated Govt. Political system)
- (A) पैतृक व्यवस्थाएँ - अफ्रीका औगाडौगू
- (B) केन्द्रीकृत नौकरशाही - द्यूडरकाल का ब्रिटेन (UK)
- (C) सामन्ती व्यवस्था - 12वीं सदी का फ्रांस

**3. आधुनिक व्यवस्थाएँ
(Moderns Systems)**

विशेषता-

- विभेदीकृत राजनीतिक संरचनाएँ (Differentiated Political Infrastructures)

लौकिकीकृत नगर राज्य

- नगर-राज्य-एथेन्स
- सीमित विभित्रीकरण

**गतिशील आधुनिक व्यवस्थाएँ
(Mobilized Modern System)**

**थोपी हुई गतिशीलता युक्त आधुनिक व्यवस्थाएँ
(Premobilized Modern System)**

उच्च विभित्रीकरण व लौकिकीकरण

**(A) लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ
(Democratie)**

- उच्च उपव्यवस्था स्वायत्तता ब्रिटेन एवं अमेरिका (UK and USA)
- सीमित उपव्यवस्था स्वायत्तता फ्रांस (चौथा गणराज्य)
- निम्न उपव्यवस्था स्वायत्तता मैक्सिको

(B) अधिनायकवादी (Authoritarian)

- नियंत्रित उप-व्यवस्थाएँ व प्रजाभाव-सहभागी संस्कृति (Subject Participant Culture)
- रेडिकल सर्वाधिकारवादी (Totalitarian) - सोवियत संघ (USSR)
- रूढ़िवादी सर्वाधिकारवादी - जर्मनी
- रूढ़िवादी अधिनायकवादी (Conservative Authoritarian) - स्पेन
- आधुनिकीकृत अधिनायकवादी - ब्राजील

- थोपी हुई गतिशीलता युक्त अधिनायकवादी - घाना
- थोपी हुई गतिशीलता युक्त लोकतांत्रिक 1966 से नाइजीरिया

निष्कर्ष:-

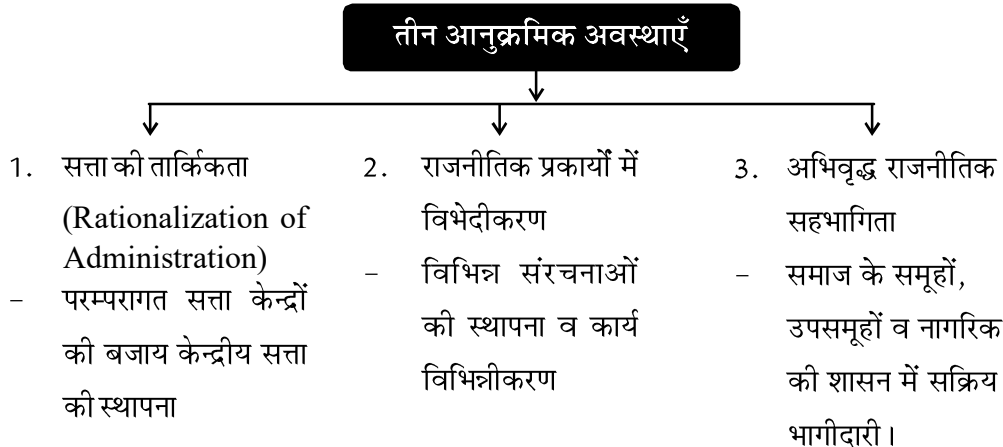
- आमण्ड-पावेल के विकास उपागम में, व्यवस्था-सिद्धांत के साथ मिलकर संरचनात्मक-प्रकार्यवादी विश्लेषण अपने उच्चतम शिखर पर पहुँच गया।
- इतना होते हुए भी, विकासशील देशों के सन्दर्भ में उसमें कुछ अपूर्णताएँ, पूर्वाग्रह एवं दुर्बलताएँ यथावत् बनी हुई हैं। गोल्डर ने उसे “यथास्थितिवादी एवं पूंजीवादी विश्लेषण-योजना मानते हुए प्रकार्यवादियों को औद्योगिक समाज के समाज-शास्त्रीय अनुदार सिपाही माना है।” वे तृतीय विश्व की आकांक्षाओं, उग्र एवं आमूलचूल परिवर्तनों को समझने में सक्षम नहीं हैं।
- रन्सीमैन इसे ‘मार्क्सवाद का विकल्प’ बताता है।

सैमुअल पी. हटिंगटन

पुस्तकें:-

- लेख - Political Development and Political Decay (1965)
- पुस्तक - Political Order in Changing Societies (1968)
- The Crisis of Democracy (1975)

राजनीतिक विकास की परिभाषा “राजनीतिक विकास राजनीतिक आधुनिकीकरण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का राजनीतिक व्यवस्था द्वारा समाधान खोजने की क्षमता का नाम है।” - हटिंगटन



- ♦ हटिंगटन के अनुसार राजनीतिक विकास इन तीन चरणों में होता है। ये चरण एक निश्चित क्रम में आने चाहिए। अगर यह क्रम बिगड़ जाता है, तो विकास के बजाय राजनीतिक पतन शुरू हो जाता है। उनका कहना है कि अगर ये तीनों चरण बहुत पास-पास, उल्टे क्रम में, या एक साथ लागू हो जाएँ, तो यह स्थिति खतरनाक हो जाती है। ऐसी अवस्था में राजनीतिक व्यवस्था कमजोर पड़ जाती है और अस्थिरता बढ़ती है।

इस समस्या से बचने के लिए दो उपाय बताए गए हैं:

1. सत्ता के केन्द्रीकरण या जन-संगठन (mobilization) की गति को धीमा किया जाए, या
 2. राजनीतिक संस्थाओं के निर्माण की प्रक्रिया को तेज किया जाए।
- ♦ सैमुअल पी. हटिंगटन ने अपने एक लेख 'Political Development and Political Decay' (1965) में राजनीतिक विकास को एक - मार्गीय/एकल रेखीय (Unilinear) मानने पर कड़ी आलोचना की है।
 - ♦ राजनीतिक विकास अप्रत्यावर्तनीय (Irreversibel) या ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो उल्टी नहीं जाती हो। विकासशील राज्यों में हो रहे सब राजनीतिक परिवर्तन राजनीतिक विकास नहीं माने जा सकते बल्कि राजनीतिक पतन भी हो सकता है।
 - ♦ राजनीतिक विकास के विकास स्तर अनुक्रम में प्रचलित नहीं होते हैं, क्योंकि अन्य कई तथ्य और परिवर्त्य ऐसा नहीं होने देते।

- ♦ राजनीतिक विकास के साथ-साथ राजनीतिक ह्रास/पतन भी होता है। इस प्रकार हण्टिंगटन राजनीतिक ह्रास/पतन (Decay) से संबंधित है।

हण्टिंगटन के राजनीतिक पतन (Political Decay) की संकल्पना

- राजनीतिक पतन से हण्टिंगटन का मतलब यह है कि जब राजनीति में जनसाधारण का तेजी से प्रवेश हो जाता है और हित समूह, जातियाँ या अन्य समूह राजनीति को प्रभावित करने लगते हैं—भले ही उनका उद्देश्य सार्वजनिक हित ही क्यों न हो—लेकिन राजनीतिक संस्थाएँ उतनी मजबूत नहीं होतीं।
- हण्टिंगटन के अनुसार, शासकों या प्रशासन द्वारा किया गया दमन और उससे पैदा हुई अव्यवस्था को वे राजनीतिक पतन नहीं मानते। उनके विचार में राजनीतिक पतन का मुख्य कारण यह है कि
 - राजनीतिक संगठन और राजनीतिक प्रक्रियाएँ ठीक तरह से संस्थागत (institutionalized) नहीं होतीं।
 - हण्टिंगटन—‘राजनीतिक क्षरण का अभिप्राय है, सामाजिक आकांक्षाओं व उनकी पूर्ति के मध्य उत्पन्न खाई है।’
- उपाय - राजनीतिक विकास को संस्थाकरण के रूप में समझना
- राजनीतिक विकास का सही तरीका यह है कि हम उसे संस्थाकरण (Institutionalization) के रूप में देखें।
- संस्थाकरण का मतलब है कि राज्य की संस्थाएँ और प्रक्रियाएँ मजबूत, स्थिर, आपस में जुड़ी हुई और बदलती परिस्थितियों के अनुसार ढलने वाली हों।
- ♦ राजनीतिक पतन (Decay) तब होता है जब लोगों की मांगें, चेतना, भागीदारी व जनगतिशीलता तो बढ़ जाती है पर उसके अनुरूप संस्थायन का विकास नहीं हो पाता तो विकास की जगह पतन आरंभ हो जाता है। उदाहरण— अरब बसंत क्रांति।
- हण्टिंगटन ने बताया है कि राजनीतिक विकास में दो प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलनी चाहिए। जैसे—
 - (i) **सामाजिक संघटन (Social Mobilization)**— सामाजिक संघटन की क्रिया में प्राचीन सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और आर्थिक निष्ठाएँ टूटती जाती है तथा उनका स्थान नवीन आशाएँ, उम्मीदें, आकांक्षाएँ व मांगें आदि ले लेती है।
 - (ii) **आर्थिक विकास (Economic Development)**
- लेकिन अगर आर्थिक विकास इतनी तेजी से नहीं बढ़ता कि इन नई माँगों को पूरा कर सके, तो माँगें बहुत बढ़ जाती हैं और उन्हें पूरा करने की क्षमता कम रह जाती है। इससे समाज में निराशा और असंतोष पैदा होता है।
- अगर लोगों को नीति-निर्माण की प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर मिले, तो समाज में फैलने वाली अव्यवस्था और टूट-फूट को रोका जा सकता है। लेकिन यह तभी संभव है जब मजबूत राजनीतिक संस्थाएँ हों।
- यदि संस्थाएँ मजबूत नहीं होतीं, तो व्यवस्था धीरे-धीरे क्षय (Decay) की ओर बढ़ जाती है।
- अगर ये दोनों प्रक्रियाएँ समानान्तर नहीं चलती तो संस्थाकरण सही ढंग से नहीं हो सकता और राजनीतिक पतन (Political Decay) की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- ♦ जन सहभागिता + संस्थाकरण = राजनीतिक विकास
- ♦ राजनीतिक संस्थायन का तात्पर्य है— (1) राजनीतिक लामबंदी (2) राजनीतिक समेकन (3) राजनीतिक प्रतिनिधित्व, परंतु राजनीतिक अपखण्डन इसमें शामिल नहीं है।

गैप परिकल्पना (Gap Hypothesis) :-

- ♦ हण्टिंगटन के अनुसार बढ़ती जनआकांक्षा व उनकी पूर्ति के मध्य खाई उत्पन्न होना (Gap आ जाना) ही पतन का कारण है। अर्थात् राजनीतिक सहभागिता व संस्था निर्माण अथवा संस्थाकरण (Institutionalization) साथ-साथ चलने चाहिए तभी राजनीतिक विकास होता है।
- ♦ हण्टिंगटन के अनुसार एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में **सामाजिक जागरण** तेजी से बढ़ा है। शहरों का विस्तार हो रहा है, लोग पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं, उद्योग बढ़ रहे हैं, प्रति व्यक्ति आय धीरे-धीरे बढ़ रही है और मीडिया

व संचार के साधन फैल रहे हैं। इससे लोगों की आकांक्षाएँ और अपेक्षाएँ बहुत बढ़ गई हैं।

- लेकिन समस्या तब पैदा होती है जब संस्थाएँ (जैसे संसद, राजनीतिक दल, प्रशासन, कानून व्यवस्था) इस सामाजिक बदलाव के साथ मजबूत नहीं बन पातीं। जब संस्था-निर्माण, सामाजिक जागरण की गति से पीछे रह जाता है, तो राजनीतिक व्यवस्था पर भारी दबाव पड़ता है।
- इस स्थिति में सरकार लोगों की माँगों को समझने और हल करने में असमर्थ हो जाती है। परिणामस्वरूप टकराव, असंतोष और अव्यवस्था बढ़ती है। लोकतंत्र मजबूत होने के बजाय कमजोर होने लगता है और कई देशों में सैनिक शासन या एकदलीय शासन स्थापित हो जाता है।
- इस प्रकार हण्टिंगटन राजनीतिक विकास को संस्थानीकरण व प्रक्रियाओं से जोड़ देता है।

राजनीतिक विकास व पतन के लक्षण (हण्टिंगटन)

राजनीतिक विकास	राजनीतिक पतन
(1) अनुकूलनशीलता (Adaptability)	कट्टरता (Rigidity)
(2) जटिलता (Complexity)	सरलता (Simplicity)
(3) स्वायत्तता/विकेन्द्रीकरण (Autonomy)	पराधीनता (Subordination)
(4) एकीकरण/संस्कृतता (Coherence)	विखण्डन (Disunity)

- ‘राजनीतिक विकास को सामाजिक-आर्थिक आधुनिकीकरण (राजनीतिक विकास व राजनीतिक आधुनिकीकरण) से अलग करने वाला विचारक हण्टिंगटन है जबकि लुसियन पाई व कॉलमैन दोनों को एक ही मानते हैं।
- सर्वप्रथम हण्टिंगटन ने राजनीतिक विकास को आधुनिकीकरण से पृथक माना और बताया कि दोनों में सम्बन्ध होते हुये भी दोनों पृथक प्रकार की प्रक्रियाएँ हैं।
- राजनीतिक आधुनिकीकरण व राजनीतिक विकास अलग-अलग हैं। इनका सीधा संबंध नहीं है।

हण्टिंगटन की व्यवस्था की अवधारणा-

- पुस्तक - Political Order in Changing Societies (1968) - इसमें व्यवस्था (Order) व स्वतंत्रता के आपसी संबंधों की व्याख्या की गई है।
- राजनीतिक विकास में आधुनिकीकरण और औद्योगिक सम्मिलित नहीं है।
- तर्क की दृष्टि से व्यवस्था (Order), स्वतंत्रता से पहले है।
- अधिकतर विकासशील देश सामाजिक आधुनिकीकरण को राजनीतिक पतन की कीमत पर खरीद रहे हैं। आधुनिकता का अर्थ स्थिरता (Stability) है, परन्तु विकासशील देशों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया अस्थिरता को जन्म देती है।
- राजनीतिक विकास का मुख्य लक्षण है- राजनीतिक व्यवस्था (Political order)
- राजनीतिक पतन का मुख्य लक्षण है- राजनीतिक अव्यवस्था (Political Disorder)
- हण्टिंगटन के अनुसार - प्लेटो उन गिने-चुने सिद्धांतवादियों में से है जिसने राजनीतिक पतन का स्पष्ट सिद्धांत प्रस्तुत किया।
- हण्टिंगटन - ‘विभिन्न देशों में महत्त्वपूर्ण राजनीतिक भेद उनमें शासन के प्रकार का नहीं, शासन की मात्रा का है।’
- हण्टिंगटन - ‘प्रमुख समस्या स्वतन्त्रता नहीं है, परन्तु एक विधिमान्य राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण है। स्वतन्त्रता के बिना व्यवस्था की कल्पना की जा सकती है परन्तु व्यवस्था के बिना स्वतन्त्रता की नहीं। सत्ता को सीमित करने से पहले यह आवश्यक है कि सत्ता का अस्तित्व तो हो’।
- राजनीतिक पतन रोकने का उपाय ‘राजनीतिक सहभागिता (Political Participation) व ‘राजनीतिक संस्थाकरण’ (Political

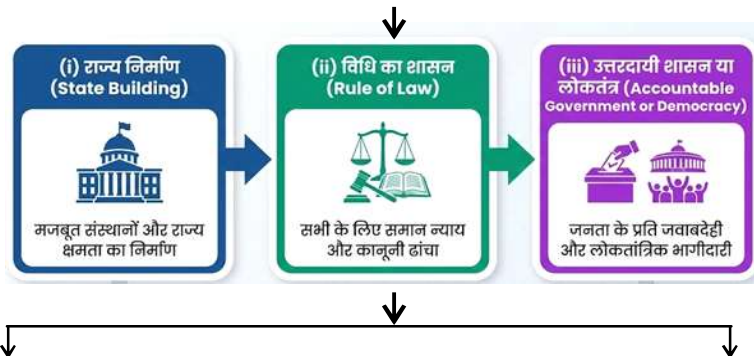
Institutionalization) को साथ-साथ चलाना है। हण्टिंगटन संस्थाकरण (Institutionalization) को महत्वपूर्ण उपाय मानता है।

- ◆ हण्टिंगटन के अनुसार- भारत 'प्रतिलोमी' (Reverse) उदाहरण है जहाँ आधुनिक राजनीतिक संस्थाओं के रूप में राजनीतिक दल व नौकरशाही हैं जो काफी विकसित हैं पर राष्ट्रीय राज्य आधुनिकीकरण के सन्दर्भ में काफी पिछड़ा हुआ है।
- ◆ राजनीतिक विकास अप्रत्यावर्तनीय (irreversible) या ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो उल्टी नहीं जाती हो।
- ◆ विकासशील राज्यों में हो रहे सब राजनीतिक परिवर्तन राजनीतिक विकास नहीं माने जा सकते।
- ◆ माइनर वीनर भी 'राजनीतिक संस्थाकरण' (Political Institutionalization) को राजनीतिक विकास का आवश्यक तत्व मानता है।
- ◆ विकास में बुर्जुआ की भूमिका को महत्वपूर्ण मानता है- डॉड

माइनर वीनर की पुस्तकें -

- (1) Party Politics in India - 1957
- (2) The Politics of Scarcity : Public Pressure and Political Response in India - 1962
- (3) State Politics in India - 1968
- (4) Sons of the Soil - 1978

फ्रांसिस फुकुयामा - (हण्टिंगटन से प्रभावित)
पुस्तक - The Origins of Political Order (2011)
- Political Order and Political Decay (2014)



विकास के घटक

1. राज्य निर्माण (State Building)
 - सशक्त व आधुनिक राज्य
2. विधि का शासन (Rule of laws)
3. उत्तरदायी शासन/लोकतंत्र (Accountable Government)
 - सर्वोत्तम उदाहरण- डेनमार्क
 - राजनीतिक विकास का तात्पर्य स्थिरता से है। स्थिर राज्य (Stable State) ही राजनीतिक रूप से विकसित राज्य है।
 - स्थिरता के लिए-उपर्युक्त तीनों घटकों में संतुलन आवश्यक है।
 - चीन में **सशक्त राज्य** पर तो बल दिया गया है पर बाकि दो तत्वों की अवहेलना कर दी गई है।
 - भारत (India) में ब्राह्मणों ने विधि के शासन पर बल दिया पर राज्य निर्माण पर नहीं अतः राज्य कमजोर पड़ा।
 - इस्लामी देशों में उत्तरदायित्व का अभाव था।
 - तीनों तत्वों का सही समन्वय आधुनिक उदार लोकतंत्रों में ही संभव है जिसका उदाहरण है- डेनमार्क, स्वीडन, इंग्लैण्ड जैसे छोटे देश हैं। (इनमें यू.एस.ए. शामिल नहीं है।)

पतन के कारण

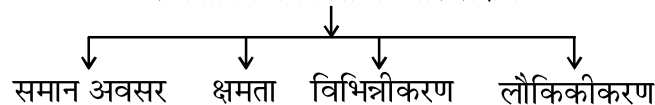
1. विसंस्थाकरण (Deinstitutionalization)
 - कारण - केन्द्रीय सत्ता का अभाव। शक्तिशाली संस्थाओं द्वारा सार्वजनिक की बजाय निजी हित में कार्य करना।
2. पुनर्विरासतीकरण (Repartitionization)
 - इसका कारण है - मनुष्य की सामाजिक प्राणी वाली प्रवृत्ति जिसके कारण वह 'रिश्तेदारों का चयन' करता है या 'पारस्परिक परोपकारिता' करता है।

- फुकुयामा ने अपनी पुस्तक 'Political Order and Political Decay (2014)' में बताया है कि किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के तीन मुख्य घटक होते हैं-
 1. **आर्थिक वृद्धि** (अर्थव्यवस्था का विकास)
 2. **सामाजिक गतिशीलता** (लोगों का आगे बढ़ने के अवसर पाना)
 3. **विचार या वैधता** (सरकार को जनता की स्वीकृति और विश्वास)
- तीनों घटकों का संतुलन व्यवस्था (Order) के लिए आवश्यक है।
- फ्रांसिसी फुकुयामा के अनुसार विकसित देश 'स्थिर राज्य (Stable State)' होते हैं, यानी ऐसे राज्य जहाँ व्यवस्था मजबूत होती है और हालात सामान्य रूप से स्थिर रहते हैं।
- फुकुयामा के अनुसार इन तीनों का संतुलन सबसे अच्छी तरह आधुनिक उदार लोकतंत्र में पाया जाता है। स्वीडन, डेनमार्क और इंग्लैंड जैसे देश इसके उदाहरण हैं।
- उनका मानना है कि आधुनिक उदार लोकतांत्रिक व्यवस्था में अन्य व्यवस्थाओं की तुलना में राजनीतिक पतन की संभावना कम होती है, क्योंकि इसमें ऐसी आत्म-सुधार प्रणाली (Self-Correcting Mechanism) होती है, जिसके माध्यम से गलतियों को पहचाना और सुधारा जा सकता है। इससे लोकतंत्र लंबे समय तक स्थिर और मजबूत बना रहता है।
- **राजनीतिक संस्थाओं के निर्माण के चरण:-**
 1. जत्था समाज से कबिलाई समाज।
 2. कबिलाई समाज से राज्य।
 3. वंशानुगत (Patrimonial) राज्य से आधुनिक राज्य।
 4. स्वतंत्र विधिक संस्थाओं का निर्माण।
 5. जन उत्तरदायी औपचारिक संस्थाओं का उदय।

सी.एच. डॉड

पुस्तक - Political Development

राजनीतिक विकास के चार लक्षण



एफ. डब्ल्यू. रिग्स (Riggs)

- **फ्रैंड डब्ल्यू. रिग्स** ने विकासशील देशों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं का गहन अध्ययन किया है। रिग्स ने अपनी पुस्तक 'The Ecology of Development' (1964) में राजनीतिक विकास का वर्णन किया है।
- ♦ राजनीतिक विकास का '**द्वन्द्वात्मक सिद्धांत**' (Dialectical Theory) - **एफ.डब्ल्यू. रिग्स**
- ♦ **एफ. डब्ल्यू. रिग्स** ने **जेम्स चार्ल्सवर्थ** की पुस्तक 'Contemporary Political Analysis' (1967) में लिखे अपने लेख में '**विकास-फंद**' (Development Trap) की समस्या पर ध्यान दिलाया है।

♦ विकास फन्दा (Development Trap) -

लुसियन पाई का अनुसरण-

समानता	क्षमता	विभेदीकरण
वामपंथी	दक्षिणी पंथी	यह मेरूदण्ड है
(बायें)	(दाएँ)	

- राजनीतिक विकास के लिए किसी व्यवस्था में समानता व क्षमता दोनों जरूरी है।
- समानता व क्षमता में असंतुलन हो तो व्यवस्था फन्दे में फंस जाती है। यहीं 'विकास फन्दा' (Development Trap) है।
- विकासशील देश (तृतीय विश्व के देश) थोड़े साल बायें तथा दायें के बीच झुलते हैं, तब विकास होता है। पर बाद में किसी एक के चक्कर में फंस जाते हैं तो विकास रुक जाता है।
- ♦ समानता व क्षमता के आपसी संबंध तथा असंतुलन पर विशेष ध्यान देने वाला विचारक है। - एफ.डब्ल्यू. रिग्स (F.W. Riggs)
- ♦ राजनीतिक विकास का मेरूदण्ड रिग्स के अनुसार 'संरचनात्मक विभेदीकरण' है।
- अपने लेख Administrative (1963) में रिग्स ने कहा कि विकासशील देशों की व्यवस्थाओं को मापा (Quantitative) भी जा सकता है। जैसे-जैसे व्यवस्था विकास के अलग-अलग स्तरों से गुजरती है, वह कुछ हद तक संतुलन और स्थिरता प्राप्त कर लेती है।
- रिग्स के अनुसार, जिस राजनीतिक व्यवस्था में विभिन्नीकरण (Differentiation) जितना अधिक होता है-अर्थात् संस्थाएँ और भूमिकाएँ जितनी स्पष्ट और अलग-अलग होती हैं- उतनी ही अधिक उसकी क्षमता होती है कि वह
 - बाहरी दबावों का सामना कर सके,
 - अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सके, और
 - समय के अनुसार स्वयं को बदल सके।
- इन्हीं आधारों पर रिग्स ने राजनीतिक विकास का द्वन्द्वात्मक सिद्धांत (Dialectical Theory of Political Development) प्रस्तुत किया, जिसमें विकास को एक निरंतर बदलने और संतुलन खोजने वाली प्रक्रिया के रूप में समझाया गया है।

राजनीतिक विकास का द्वन्द्वात्मक सिद्धांत (Dialectical Theory of Political Development)

- रिग्स ने अपना जो राजनीतिक विकास का सिद्धांत विकसित किया उसे वह 'राजनीतिक विकास का द्वन्द्वात्मक सिद्धांत' (Dialectical Theory of Political Development) कहता है।
- एफ. डब्ल्यू. रिग्स एक संरचनावादी विचारक थे, इसलिए उन्होंने राजनीतिक विकास को समझने में संरचनाओं (संस्थाएँ, संगठन, भूमिकाएँ) पर अधिक जोर दिया।
- उनके अनुसार राजनीतिक विकास का मुख्य आधार संरचनात्मक विभिन्नीकरण है। रिग्स का मानना था कि यदि हम केवल प्रकार्यों (Functions) पर ध्यान दें और संरचनाओं को नजरअंदाज कर दें, तो राजनीतिक विश्लेषण गलत और अविश्वसनीय हो सकता है।
- राजनीतिक विकास का मूल आधार संरचनात्मक विभिन्नीकरण है। जितना ज्यादा संरचनात्मक विभेदीकरण या विभिन्नीकरण होगा, उतनी ही अधिक समस्या समाधान व लक्ष्य प्राप्ति की क्षमता होगी।

- विभेदीकरण के स्तर में वृद्धि होने पर ही समानता व क्षमता के स्तर में वृद्धि होगी।
- समानता की ओर बढ़ने पर क्षमता व क्षमता की ओर बढ़ने पर समानता में कमी आती है।
- **एफ.डब्ल्यू. रिग्स** ने अपने दूसरे लेख 'Administration Development' (1963) में बताया कि विकास की व्यवस्थाओं का परिमाणात्मक निर्धारण किया जा सकता है।
- रिग्स के इस सिद्धांत को हेगेलवादी द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया जो निरन्तर चलती रहती है; के रूप में इस प्रकार समझाया जा सकता है-

दक्षिणापंथी बल (Right-wing Forces)

- ये बल क्षमता (Capacity) और अभिजन वर्ग से जुड़े होते हैं।
- इनका झुकाव असमानता को बढ़ाने की ओर होता है।
- जब दक्षिणापंथी (क्षमता आधारित) शक्तियाँ मजबूत होती हैं, तो वामपंथी (समानता आधारित) शक्तियाँ कमजोर हो जाती हैं।

वामपंथी बल (Left-wing Forces)

- ये बल उप-अभिजनों, आंदोलनों और बहुसंख्यक जनता से जुड़े होते हैं।
- इनका मुख्य लक्ष्य समानता के स्तर को बढ़ाना होता है।
- जब वामपंथी (समानता आधारित) शक्तियाँ मजबूत होती हैं, तो दक्षिणापंथी (क्षमता आधारित) शक्तियाँ कमजोर पड़ जाती हैं।
- जो राजनीतिक व्यवस्थाएँ विकास-फंद में फँस जाती हैं, वे न तो पूरी तरह परंपरागत रहती हैं और न ही पूरी तरह आधुनिक बन पाती हैं। वे कभी बाएँ और कभी दाएँ झुकती रहती हैं, यानी बीच में लटकी रहती हैं।
- जब तक इन दोनों के बीच संतुलन नहीं बनता, तब तक संरचनात्मक विभिन्नीकरण (संस्थाओं का स्पष्ट और मजबूत होना) नहीं बढ़ पाता और विकास की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ती।

रिग्स ने इसे हेगेलवादी द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया से समझाया है। इसके अनुसार-

- दक्षिणपंथ एक वाद (Thesis) है,
- वामपंथी शक्तियाँ उसका प्रतिवाद (Antithesis) हैं,
- और दोनों के टकराव से जो नया संतुलन बनता है, वही संवाद (Synthesis) होता है।

♦ हेगेल की प्रक्रियानुसार

संरचनात्मक विभेदीकरण (सम्वाद)



क्षमता (दक्षिणपंथ) (वाद) ————— समानता (वामपंथ) (प्रतिवाद)

- रिग्स की तरह, किन्तु उसे भी अधिक व्यापक आधार पर विकास की व्याख्या करने का प्रयास आमण्ड एवं पॉवेल ने अपनी पुस्तक 'Comparative Politics : A Developmental Approach' (1966) में किया है।

डेविड ए. एक्टर

- ◆ पुस्तक - The Politics of Modernizations (1965)
- ◆ एक्टर - आधुनिकीकरण को औद्योगिकीकरण व राजनीतिक विकास से अलग मानता है।
- ◆ डेविड एक्टर के अनुसार राजनीतिक विकास : डेविड एक्टर के अनुसार राजनीतिक विकास केवल राजनीतिक आधुनिकीकरण तक सीमित नहीं होता, बल्कि उससे आगे की प्रक्रिया है। एक्टर मानते हैं कि आधुनिकीकरण, विकास और औद्योगिकीकरण तीनों अलग-अलग प्रक्रियाएँ हैं, हालांकि ये आपस में जुड़ी होती हैं।
- ◆ एक्टर के विचारणा (thoughts) व विकास का क्रम-
विकास → आधुनिकीकरण → औद्योगिकीकरण → आधुनिकीकरण की राजनीति
- ◆ एक्टर- राजनीतिक पतन को स्थिरता के विपरीत मानते हैं। जो भ्रष्टाचार, अधिनायकवाद और हिंसा को दर्शाता है

एक्टर दो मॉडलों की पहचान करते हैं-

- (i) **धर्म निरपेक्ष या लौकिक स्वेच्छातंत्र** (Secular Libertarian) या बहुलवादी तंत्र (Pluralistic System) - इसमें विभेदित शक्ति और नेतृत्व, सौदेबाजी और समझौता जैसे उदार लोकतंत्रवादी गुण पाये जाते हैं। उदाहरण- संयुक्त राज्य अमेरिका (USA)
Secular Libertarianism में समाधान व समझौते की प्रक्रिया के माध्यम से लोकतंत्र की स्थापना भी जाती है। इसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता व धर्मनिरपेक्ष मूल्यों पर जोर दिया जाता है।
- (ii) **पवित्र सामूहिकता** (Sacred-Collectivity) - इसमें करिश्माई नेतृत्व, राजनीतिक धार्मिकता और जनवादी पार्टी संगठन जैसे गुण पाये जाते हैं। उदाहरण- माओ के अधीन चीन, नासिर कालीन मिश्र और वाना एनाक्रुमा के अधीन घाना।
(Sacred Collectivity) में (धर्म निर्भर समष्टिवादी) जनसंघटन (Mobilization) के द्वारा सर्वाधिकारवाद की ओर बढ़ता है। इसमें सामूहिकता (Mobilization) व धार्मिक भावनाओं के आधार पर सत्ता को मजबूत किया जाता है।

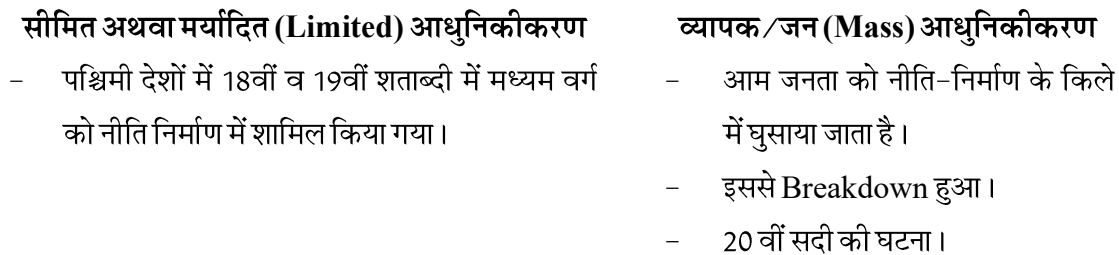
कार्ल डायच

कार्ल डायच ने पुस्तक 'The Nerves of Government' (1963) में राजनीतिक विकास में अधिकाधिक सूचनाओं को आत्मसात् करने तथा उसका उपयोग करने की क्षमता पर बल दिया, ताकि व्यवस्था कुशलतापूर्वक अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

आइजनस्टैंड

- पुस्तक - Breakdown of Modernization (1966)
- **'Breakdown'** की अवधारणा: आइजनस्टैंड के अनुसार विकासशील देशों ने आधुनिकीकरण के नाम पर पश्चिमी संस्थाएँ तो अपना लीं, लेकिन लोगों की सोच, परम्पराएँ, सामाजिक-आर्थिक आदतें और मानसिकता वैसी की वैसी ही बनी रहीं। संस्थाएँ तो बदल गईं, पर लोगों का व्यवहार और विश्वास नहीं बदला। इसी असंतुलन के कारण राजनीति में रुकावटें, अस्थिरता और अव्यवस्था पैदा हो गई, जिसे राजनीतिक अवरोध (Political Breakdown) कहा जाता है।

राजनीतिक विकास के दो स्तर



राजनीतिक विकास की संक्रियात्मक शर्तें-

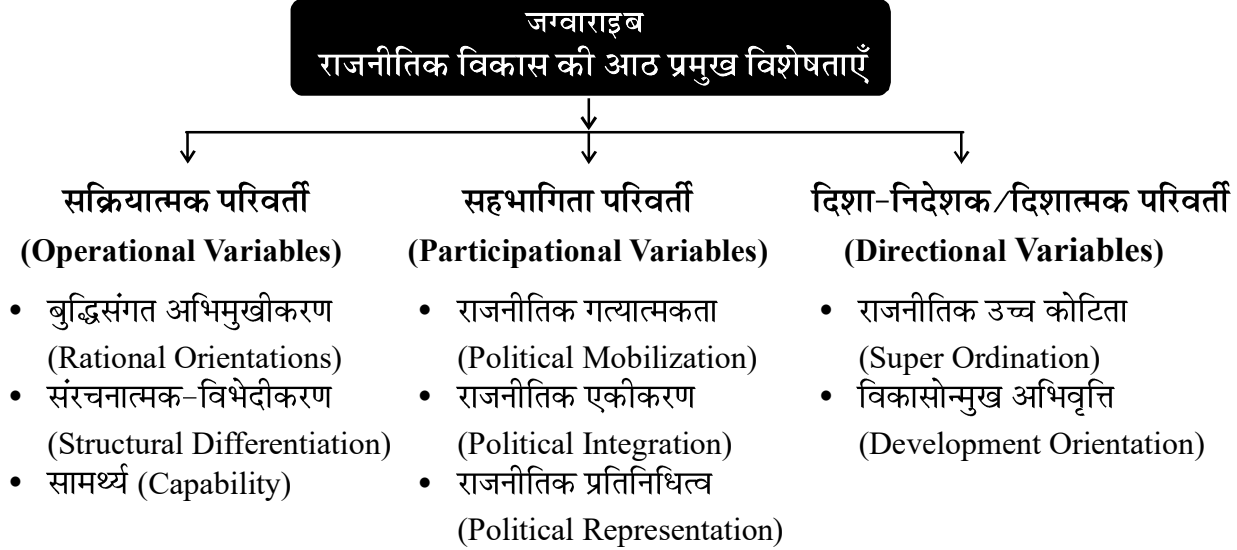
- आइजन्स्टैंड द्वारा निर्धारित शर्तों की इस प्रकार व्याख्या की जा सकती है:-
 - (1) संचार साधनों का पर्याप्त पुनर्गठन।
 - (2) देश में शिक्षा का पर्याप्त विकास।
 - (3) नये विकासात्मक कार्यों के लिए समाज के निम्न और साधारण क्षेत्रों से पर्याप्त संख्या में जनसाधारण का नियोजन (Mobilization)।
 - (4) अभिजन वर्ग की कृत्यात्मकता का अनवरत रूप से निर्वाह हो।
 - (5) अभिजनों के पास विकास की एक दृढ़ योजना हो।
- आइजन्स्टैंड कुछ ऐसी अपकृत्यात्मक (Dyfunctional) बातों की भी चर्चा करता है जो राजनीतिक विकास के मार्ग में बाधक सिद्ध हो सकती हैं:
 - (a) सत्ता का बार-बार हस्तान्तरण, जिससे व्यवस्था की स्थिरता के भंग होने की आशंका रहती है,
 - (b) शासक अभिजनों में बहुत अधिक स्वस्वार्थता और भ्रष्टाचार अथवा उनके सिद्धान्तों और व्यवहार में बहुत अधिक अन्तर, और
 - (c) ऊंचे प्रकार्यों, अवसरों और पुरस्कारों के वितरण में न्याय की भावना की कमी।

हेलियो जग्वाराइब

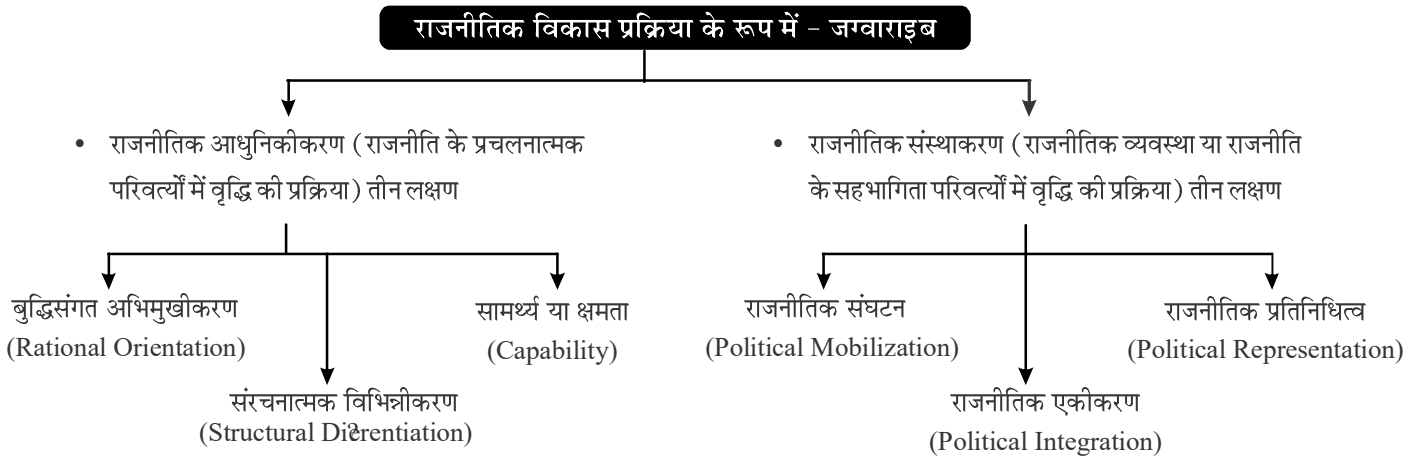
- इनके अनुसार राजनीतिक विकास को चार प्रकार से समझा जा सकता है, जो निम्न हैं-
 - (i) राजनीतिक विकास परिवर्त्य (Variable) के रूप में
 - (ii) राजनीतिक विकास राजनीतिक दिशा (Political Direction) के रूप में
 - (iii) राजनीतिक विकास एक प्रक्रिया (Process) के रूप में
 - (iv) राजनीतिक विकास विभिन्न पहलुओं (Different Aspects) के रूप में

हेलियो जाग्वाराइब (Helio Jaguaribe)

- पुस्तक - Political Development : A General Theory and A Latin American Study, 1973
 - जाग्वाराइब के अनुसार राजनीतिक विकास तब होता है जब दो चीजें साथ-साथ हों-
 1. राजनीतिक आधुनिकीकरण (नई सोच, नई संस्थाएँ, जनता की भागीदारी)
 2. राजनीतिक संस्थाकरण (मजबूत, स्थायी और प्रभावी राजनीतिक संस्थाएँ)
 - राजनीतिक विकास = राजनीतिक आधुनिकीकरण + राजनीतिक संस्थाकरण

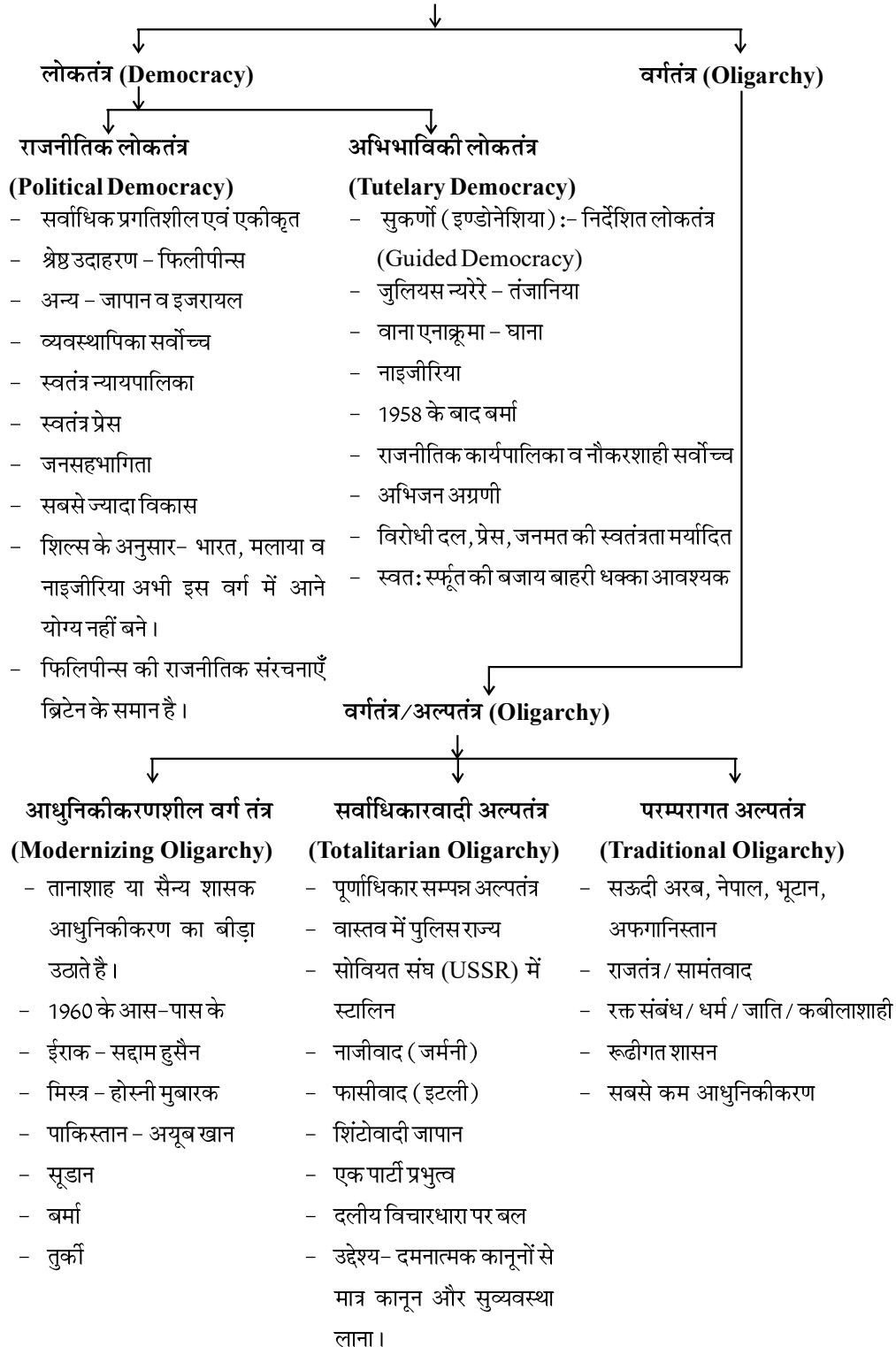


- राजनीतिक विकास के तीन लक्षण:- (i) प्रतिनिधित्व (Representative) (ii) वैधता (Legitimacy)
(iii) प्रयोज्यता/सेवा क्षमता (Serviceability)- मांगों की पूर्ति की क्षमता



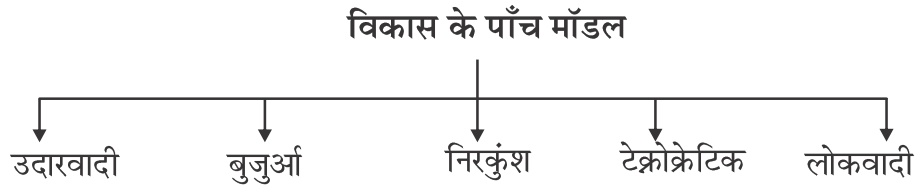
एडवर्ड शिल्स

- ◆ शिल्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Political Development in New States' (1962) में **संक्रमणकालीन (विकासशील)** राजव्यवस्थाओं को पांच वर्गों में बांटा है। पर यह वर्गीकरण पाश्चात्य राजनीतिक व्यवस्थाओं को आदर्श मान कर किया गया है।
- ◆ इस वर्गीकरण में अभिजनों की विकास व आधुनिकीकरण में भूमिका को रेखांकित किया गया है।



सेमुअल पी. हण्टिंगटन व जॉन एम. नेल्सन

- पुस्तक - No Easy Choice: Political Participation in Developing Countries (1976)
- इस पुस्तक में विकासशील देशों में जनता की राजनीतिक भागीदारी से जुड़ी समस्याओं और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है।



(1) उदारवादी मॉडल (Liberal Model)

- इसमें विकास और आधुनिकीकरण को समाज की भौतिक प्रगति के रूप में देखा जाता है।
- माना जाता है कि इससे असमानता और हिंसा कम होती है।
- यह मॉडल जनतांत्रिक भागीदारी बढ़ाने पर जोर देता है, जो प्रायः पिछड़े समाजों में कम पाई जाती है।

(2) बुजुर्ग मॉडल (Bourgeois Model)

- यह मॉडल उभरते हुए मध्य वर्ग की राजनीतिक जरूरतों को दर्शाता है।
- राजनीतिक भागीदारी को इस तरह नियंत्रित किया जाता है कि आर्थिक विकास होता है, लेकिन साथ ही आय और वर्गीय असमानता भी बढ़ती है।

(3) निरंकुश मॉडल (Authoritarian Model)

- इसमें सरकार मध्य वर्ग की राजनीतिक भागीदारी को दबा देती है।
- इसके बाद वह निम्न वर्ग के समर्थन को अपने पक्ष में करने की कोशिश करती है।
- सत्ता का प्रयोग ऊपर से नीचे की ओर किया जाता है।

(4) टेक्नोक्रैटिक मॉडल (Technocratic Model)

- इस मॉडल की पहचान होती है:
- कम राजनीतिक भागीदारी
- उच्च विदेशी निवेश
- निर्णय विशेषज्ञों और तकनीकी वर्ग द्वारा लिए जाते हैं, न कि व्यापक जनभागीदारी से।

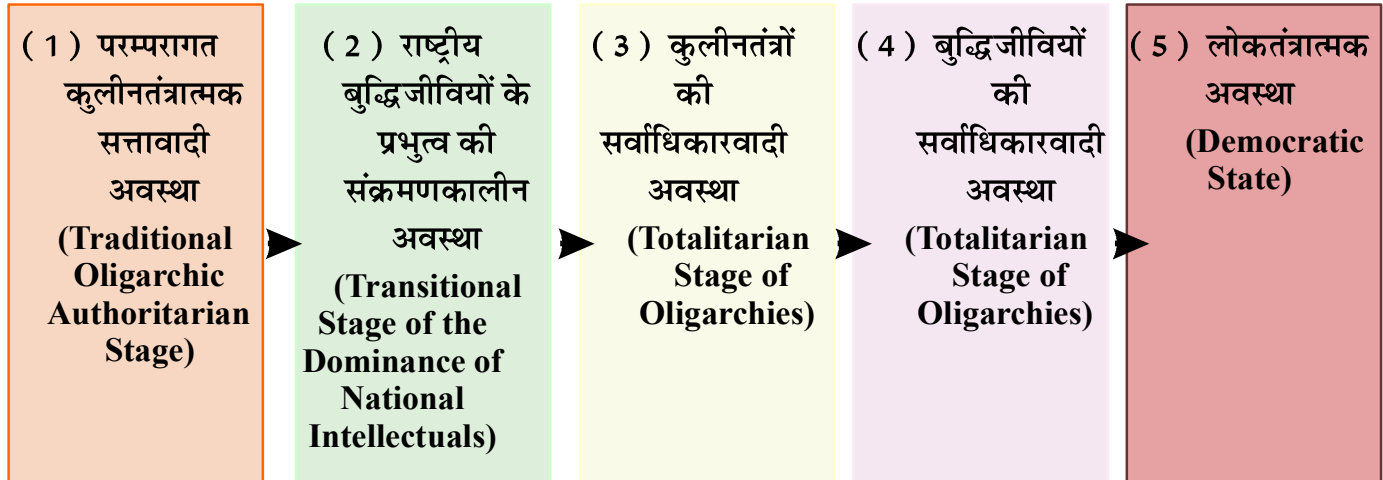
(5) लोकवादी मॉडल (Populist Model)

- इसमें राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाने पर जोर दिया जाता है।
- आर्थिक वृद्धि की गति भले ही कम हो, लेकिन आर्थिक समानता को अधिक महत्व दिया जाता है।

जॉन काउत्स्की (John Kautsky)

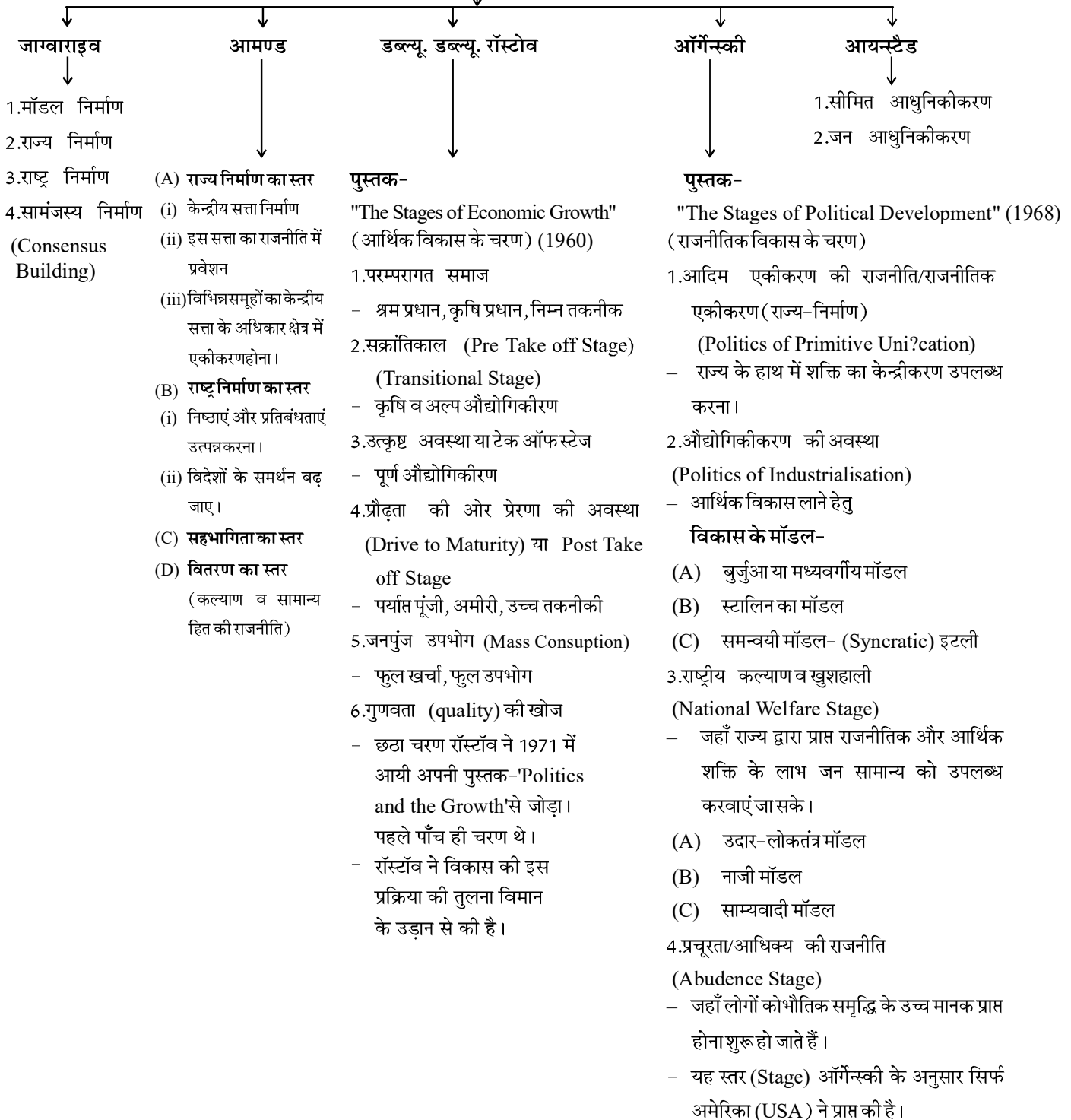
- काउत्स्की ने अपनी पुस्तक- **Political change in underdeveloped countries: Nationalism and communism** (1962) में राजनीतिक विकास की क्रमिक रूप से पाँच अवस्था बताई है। जिनका संबंध परम्परागत व औद्योगिक दोनों समाजों से है।

**काउत्स्की द्वारा राजनीतिक विकास के पाँच वर्ग
(Kautsky's Five Stages of Political Development)**



एकल रेखीय विकास

**राजनीतिक विकास के चरण
(STAGES OF POLITICAL DEVELOPMENT)**



आमण्ड - के राजनीतिक विकास की पाँच आवश्यकताएँ हैं -

1. **विकास की क्रमिक अवस्थाएँ (Successiveness):** राजनीतिक विकास चरणों में होता है। ये चरण एक के बाद एक आते हैं, सभी एक साथ नहीं।
 2. **साधनों की उपलब्धता (Availability):** विकास के लिए समाज के पास पर्याप्त संसाधन होने चाहिए, जैसे धन, मानव शक्ति और संस्थाएँ।
 3. **अन्य सामाजिक व्यवस्थाओं का साथ-साथ विकास (Congruent Development):** राजनीतिक विकास तभी सफल होता है जब आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास भी साथ-साथ हो।
 4. **राजनीतिक व्यवस्था की आंतरिक क्षमता:** राजनीतिक व्यवस्था में इतनी ताकत और क्षमता हो कि वह समय-समय पर आने वाली समस्याओं और चुनौतियों का सामना कर सके।
 5. **अभिजनों की अनुक्रियाशीलता :** राजनीतिक नेता और अभिजन वर्ग समाज से आने वाली मांगों और समस्याओं का सकारात्मक और रचनात्मक जवाब देने में सक्षम हों।
- **आदिम राजनीतिक व्यवस्था:** ऐसी व्यवस्था को विकास से जुड़ी बुनियादी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
 - **परम्परावादी राजनीतिक व्यवस्था:** इस प्रकार की व्यवस्था के सामने राज्य निर्माण (State Building) और राष्ट्र निर्माण (Nation Building) की समस्याएँ होती हैं।
 - **अधिक विकसित, विभिन्नीकृत और लौकिक राजनीतिक व्यवस्था:** ऐसी राजनीतिक व्यवस्थाओं को जनता की सहभागिता बढ़ाने और संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
 - **आर्गेन्स्की- औद्योगिकीकरण की राजनीति का स्तर तीन वैकल्पिक सम्भावनाएँ-**

तीन वैकल्पिक सम्भावनाओं वाले प्रतिमान

बुर्जुआ या मध्यवर्गीय (Bourgeois Model)	स्टालिन का मॉडल (Stalinist Model)	समन्वयी मॉडल (Syncratic Model)
- आधुनिक पश्चिमी लोकतंत्र - श्रमिकों की कीमत पर पूँजी संचय - पूँजी संचय के साधन निजी - नये बुर्जुआ, क्रांतियाँ धीरे-धीरे संक्रमणता से पहले अभिजाततंत्री अभिजनों को हटाकर स्वयं का वर्चस्व स्थापित करती है।	- श्रमिकों की कीमत पर पूँजी संचय - पूँजी संचय के साधन नये वर्ग के हाथों में - पूर्व के अभिजनों व मध्यम वर्ग को शक्तिपूर्वक व क्रांतिकारी साधनों से हटाकर नौकरशाही का नया वर्ग	- इटली के सन्दर्भ में फासीवाद का विशेष प्रतिमान - पुराने व नये अभिजनों का समन्वय - धीमी गति से पूँजी संचय श्रमिकों की कीमत पर

राजनीतिक परिवर्तन सिद्धांत व राजनीतिक विकास

**संघटकीय परिवर्तन सिद्धांत
(Componential Change Theory)**

- हण्टिंगटन का
- प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था के पाँच संघटक -
 1. संस्कृति
 2. संरचना
 3. समूह
 4. नेतृत्व
 5. नीतियाँ

**संकट परिवर्तन
सिद्धांत**

- आमण्ड
- रॉस्टोव

**जटिल परिवर्तन
का सिद्धांत**

- रोनाल्ड डी. ब्रूनर
- गैरी डी. ब्रूवर

घटकीय परिवर्तन सिद्धांत (Componential Change Theory)- सैमुअल पी. हण्टिंगटन

- सैमुअल पी. हण्टिंगटन के अनुसार राजनीतिक परिवर्तन को समझने की कुंजी राजनीतिक सहभागिता (Participation) और राजनीतिक संस्थानीकरण (Institutionalization) के बीच का संबंध है।
- हर राजनीतिक व्यवस्था में पाँच प्रमुख घटक होते हैं:
 1. राजनीतिक संस्कृति
 2. राजनीतिक संरचना
 3. समूह
 4. नेतृत्व
 5. नीतियाँ
- राजनीतिक परिवर्तन को समझने के लिए इन पाँचों घटकों में होने वाले परिवर्तनों और उनके आपसी संबंधों का गहन अध्ययन आवश्यक है।

(2) संकट परिवर्तन सिद्धांत (Crisis Change Theory)- आमण्ड तथा रॉस्टॉन

- इस दृष्टिकोण को ग्रेबियल आमण्ड ने
 - 1960 में कोलमैन के साथ
 - और 1966 में पॉवेल के साथ विकसित किया।
- 1969 में इसे और विस्तार देते हुए अनुवर्ती संतुलन (Consequent Equilibrium) की संकल्पना प्रस्तुत की गई।
- डैकवर्ड रेस्टोव के अनुसार:**
 - राजनीतिक परिवर्तन की शुरुआत वर्तमान स्थिति के प्रति असंतोष से होती है।
 - इसमें राजनीतिक नेतृत्व के निर्णय सबसे अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

(3) जटिल परिवर्तन सिद्धांत (Complex Change Theory)

रोनल्ड डी. ब्रूनर और गैरी डी. ब्रूवर ने:

- 22 परिवर्त्य (Variables)
 - 20 प्राचल (Parameters)
 - और उनके संबंधों को 12 समीकरणों (Equations) के रूप में व्यवस्थित किया।
- इस प्रारूप से यह दावा किया गया कि:

- राजनीति विज्ञान अब परिवर्त्यों के बीच जटिल और वैज्ञानिक विश्लेषण कर सकता है।
- यह स्थिति वही थी, जहाँ तक पहले केवल अर्थशास्त्र के पहुँचने का दावा किया जाता था।

राजनीतिक विकास और राजनीतिक आधुनिकीकरण में अन्तर

- तुलनात्मक दृष्टि से राजनीतिक आधुनिकीकरण, राजनीतिक विकास से व्यापक अवधारणा है। जबकि राजनीतिक विकास प्रगतिशील, गत्यात्मक एवं संकल्पनात्मक अवधारणा है।
- **हण्टिंगटन** ने सर्वप्रथम स्पष्ट किया है कि राजनीतिक आधुनिकीकरण, राजनीतिक विकास नहीं है। राजनीतिक आधुनिकीकरण में औद्योगिकीकरण के द्वारा हुए सामाजिक परिवर्तन को शामिल किया जाता है।
- राजनीतिक विकास का आधार संस्थाकरण (Institutionalization) होता है, जिसके कारण राजनीतिक व्यवस्थाएँ जनता की माँगों को पूरा करने में समर्थ बनती है।
- राजनीतिक विकास राजनीतिक आधुनिकीकरण लाने की प्रक्रिया है।
- **जग्वाराइब के अनुसार:-**
- राजनीतिक विकास की धारणा अपेक्षाकृत अधिक व्यापक एवं समावेशी है।
- राजनीतिक विकास में राजनीतिक संस्थाकरण व राजनीतिक आधुनिकीकरण शामिल है।

(Political Modernisation + Political Institutionalization = Political Development)

आइजनस्टैंड भी राजनीतिक विकास को एक व्यापक अवधारणा मानते हैं।

- **राजनीतिक आधुनिकीकरण का संबंध अधिकतर**
 - तर्कशीलता,
 - विभिन्नीकरण,
 - जनता की सहभागिता, और
 - सांस्कृतिक परिवर्तन से होता है।
- जबकि राजनीतिक विकास का जोर
- राजनीतिक व्यवस्था की संरचना, और
- उसकी क्षमता पर होता है।
- इसलिए दोनों न तो एक-दूसरे के समानार्थी हैं और न ही पूरी तरह एक-दूसरे का परिणाम।

रजनी कोठारी - द्वारा आलोचना

- (1) रजनी कोठारी के अनुसार आज का विकास मॉडल खतरनाक और आत्मघाती है। उनका कहना है कि आधुनिक विज्ञान, संचार और तकनीक मानव को पूरी तरह समझने में असफल रहे हैं। मानव की समस्याएँ और संघर्ष केवल स्थानीय नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में फैले हुए हैं।
- (2) एक तरफ पुराने झगड़े, तनाव, विचारधारात्मक संघर्ष और असमानताएँ अब भी बनी हुई हैं, तो दूसरी तरफ आधुनिकता को नए धर्म की तरह अपनाते हुए मानव ने अपनी स्वतंत्रता को कुर्बान कर दिया है।

महत्वपूर्ण तथ्य

राजनीतिक विकास के लक्षण -

विभिन्न विद्वानों के अनुसार राजनीतिक विकास के घटक / पहलू

1. **लुसियन पाई (Lucian Pye) :** राजनीतिक विकास को वे तीन मुख्य आधारों पर समझते हैं:
 1. **समानता (Equality)** - नागरिकों के लिए समान अवसर और अधिकार
 2. **क्षमता (Capacity)** - शासन की समस्याएँ सुलझाने और नीतियाँ लागू करने की शक्ति
 3. **विभिन्नीकरण (Differentiation)** - अलग-अलग कार्यों के लिए अलग संस्थाओं का विकास
2. **आमण्ड - पॉवेल (Almond-Powell) :** इन्होंने राजनीतिक विकास को प्रकार्यात्मक दृष्टि से देखा:
 1. **संस्कृति का लौकिकीकरण** - परंपरा से तर्क और विवेक की ओर बढ़ना
 2. **उप-व्यवस्थाओं की स्वायत्तता** - दल, दबाव समूह, मीडिया आदि की स्वतंत्र भूमिका
 3. **भूमिका का विभिन्नीकरण** - संस्थाओं की भूमिकाओं का स्पष्ट विभाजन
3. **फुकुयामा (Fukuyama) - घटक**
 फुकुयामा के अनुसार राजनीतिक विकास के तीन मूल स्तंभ हैं:
 1. **राज्य-निर्माण (State Building)**- प्रभावी राज्य संस्थाओं का निर्माण
 2. **विधि का शासन (Rule of Law)** - कानून का शासन, मनमानी सत्ता नहीं
 3. **उत्तरदायी शासन (Accountable Government)** - सत्ता का जनता के प्रति जवाबदेह होना
4. **सी. एच. डॉड (C. H. Dodd):** उन्होंने राजनीतिक विकास की विशेषताओं को इस प्रकार बताया:
 1. समान अवसर
 2. क्रियान्वयन की क्षमता - निर्णयों को लागू करने की शक्ति
 3. विभिन्नीकरण व विशेषीकरण
 4. लौकिकीकरण
5. **सैमुअल पी. हंटिंगटन (Huntington) :** राजनीतिक विकास की तीन मुख्य विशेषताएँ बताते हैं:
 1. सत्ता की बुद्धि-संगतता - प्रशासन का तर्कसंगत और संगठित होना
 2. प्रकार्यात्मक विभेदीकरण - अलग-अलग कार्यों के लिए अलग संस्थाएँ
 3. अभिवृद्धि सहभागिता - जनता की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि
6. **जग्वाराइब - पहलू**
 राजनीतिक विकास के तीन प्रमुख परिणाम/पहलू बताए:
 1. **प्रतिनिधित्व (Representation)** - जनता की आवाज़ का समुचित प्रतिनिधित्व
 2. **वैधता (Legitimacy)** - शासन की सामाजिक स्वीकार्यता
 3. **प्रयोज्यता / सेवा-क्षमता (Serviceability)** - जनता की जरूरतों पर प्रभावी प्रतिक्रिया

राजनीतिक विकास के चरण

- (1) **आर्गेन्सकी (Organski) :** राजनीतिक विकास को चार चरणों में देखते हैं:
 1. आदिम एकीकरण - प्रारंभिक सत्ता का केंद्रीकरण
 2. औद्योगिकीकरण - उद्योग और उत्पादन का विकास
 3. राष्ट्रीय लोक-कल्याण - जनता की भलाई पर जोर
 4. प्रचुरता / समृद्धि - आर्थिक समृद्धि की अवस्था
- (2) **आमण्ड - पॉवेल (Almond-Powell) :** राजनीतिक विकास के चार प्रमुख कार्य बताते हैं:
 1. राज्य-निर्माण - प्रभावी शासन तंत्र का निर्माण
 2. राष्ट्र-निर्माण - समाज को एक राजनीतिक इकाई में जोड़ना
 3. सहभागिता - जनता की सक्रिय भागीदारी
 4. वितरण - संसाधनों और लाभों का वितरण
- (3) **जग्वाराइब - यथार्थ दृष्टिकोण (Jaguaribe - Realistic Approach) :** राजनीतिक विकास को सामाजिक प्रक्रियाओं से जोड़ते हैं:
 1. समाजीकरण - लोगों को राजनीतिक व्यवस्था से जोड़ना
 2. यंत्रीकरण - समाज का तकनीकी और औद्योगिक विकास
 3. सामाजिक संगठन - संगठित सामाजिक ढाँचे का निर्माण
- (4) **जग्वाराइब - प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण (Jaguaribe - Functional)**
 राजनीतिक विकास को चार चरणों में समझते हैं:
 1. मॉडल निर्माण - सत्ता और शासन का नया स्वरूप
 2. राज्य निर्माण - शासन संस्थाओं का विकास
 3. राष्ट्र निर्माण - राज्य और समाज का मेल
 4. सामंजस्य निर्माण - नई सत्ता के प्रति सामाजिक सहमति
- (5) **रॉस्टोव (W. W. Rostow) :** आर्थिक-राजनीतिक विकास के छह चरण बताते हैं:
 1. परम्परागत समाज
 2. उत्कृष्ट (Take-off) के पूर्व की अवस्था
 3. उत्कृष्ट की अवस्था (Take-off)
 4. परिपक्वता की ओर
 5. उच्च उपभोग की अवस्था
 6. गुणवत्ता की खोज
- (6) **सी. ई. ब्लैक (C. E. Black) :** आधुनिकीकरण के चार प्रमुख तत्व बताते हैं:
 1. आधुनिकता की चुनौती

2. आधुनिक नेतृत्व का सशक्तिकरण
3. शहरी-औद्योगिक परिवर्तन
4. समाज का एकीकरण

(7) फुकुयामा (Fukuyama) : राजनीतिक विकास को राज्य की ऐतिहासिक यात्रा के रूप में देखते हैं:

1. जत्था से कबायती समाज
2. कबायली समाज से राज्य
3. वंशानुगत से आधुनिक राज्य
4. स्वतंत्र विधिक व्यवस्था का विकास
5. औपचारिक संस्थाओं का उदय

राजनीतिक विकास के संकट बाधाएँ

(1) लुसियन पाई (Lucian Pye) : राजनीतिक विकास को वे इन प्रक्रियाओं से जोड़ते हैं:

1. पहचान / तादात्म्यता - नागरिकों का राजनीतिक व्यवस्था से जुड़ाव
2. औचित्यपूर्णता - शासन को सही और उचित मानना
3. प्रवेशन - नए समूहों का राजनीति में प्रवेश
4. सहभाग - जनता की राजनीतिक भागीदारी
5. एकीकरण - समाज के विभिन्न वर्गों का जुड़ना
6. वितरण - संसाधनों और लाभों का वितरण

(2) लियोनार्ड बाइण्डर (Leonard Binder) : उन्होंने राजनीतिक विकास के ये तत्व बताए:

1. तादात्म्यता - नागरिकों की राजनीतिक पहचान
2. वैधता - शासन की स्वीकार्यता
3. सहभागिता - जनता की भागीदारी
4. अन्तः प्रवेशन - नए समूहों को व्यवस्था में शामिल करना

(3) आइजनस्टैण्ड (Eisenstadt) : राजनीतिक संकट और अविकास के कारण बताते हैं:

1. सत्ता का बार-बार हस्तान्तरण - राजनीतिक अस्थिरता
2. शासक अभिजनों में स्वार्थ और भ्रष्टाचार
3. न्याय की भावना का अभाव - व्यवस्था पर विश्वास की कमी

राजनीतिक व्यवस्था - प्रकार, मॉडल

(1) आमण्ड - पॉवेल (Almond-Powell): इन्होंने राजनीतिक व्यवस्थाओं को विकास के स्तर के आधार पर तीन प्रकारों में बाँटा:

1. आदिम व्यवस्थाएँ
 - सरल संरचना, सीमित राजनीतिक भूमिकाएँ

- राजनीति और समाज में कम विभेदीकरण
- 2. परम्परागत व्यवस्थाएँ
 - परम्पराओं और रूढ़ियों पर आधारित शासन
 - सत्ता सीमित वर्गों के हाथ में
- 3. आधुनिक व्यवस्थाएँ
 - विकसित संस्थाएँ, स्पष्ट भूमिकाएँ
 - उच्च राजनीतिक सहभागिता और क्षमता

(2) एडवर्ड शिल्स (Edward Shils) : शिल्स ने सत्ता के स्वरूप के आधार पर पाँच प्रकार बताए:

1. राजनैतिक प्रजातंत्र
 - मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाएँ
 - प्रभावी विपक्ष और जनमत
2. अभिभावक प्रजातंत्र
 - लोकतांत्रिक ढाँचा मौजूद, पर कार्यपालिका का वर्चस्व
3. आधुनिकीकरणशील अल्पतंत्र
 - सीमित लोकतंत्र, सेना या एक-दलीय शासन
4. सर्वाधिकारवादी अल्पतंत्र
 - पुलिस राज्य, एक विचारधारा का प्रभुत्व
5. परम्परागत अल्पतंत्र
 - वंशानुगत, धार्मिक या रूढ़िगत शासन

(3) हंटिंगटन - नेल्सन (Huntington-Nelson) : इन्होंने राजनीतिक विकास के पाँच प्रमुख मॉडल बताए:

1. उदारवादी मॉडल
 - विकास + लोकतांत्रिक भागीदारी
2. बुर्जुआ मॉडल
 - मध्य वर्ग का प्रभुत्व, असमानता में वृद्धि
3. निरंकुश मॉडल
 - दमनात्मक सत्ता, सीमित भागीदारी
4. टेक्नोक्रेटिक मॉडल
 - विशेषज्ञ शासन, विदेशी निवेश पर जोर
5. लोकवादी मॉडल
 - जनभागीदारी और आर्थिक समानता पर जोर

(4) जॉन काउत्स्की:-

1. परम्परागत कुलीनतंत्रीय सत्तावादी अवस्था।
2. राष्ट्रीय बुद्धिजीवियों के प्रभुत्व की संक्रमणकालीन अवस्था।
3. कुलीनतंत्र (Oligarchy) की सर्वाधिकारवादी अवस्था।
4. बुद्धिजीवियों की सर्वाधिकारवादी अवस्था।
5. लोकतांत्रिक अवस्था।

महत्वपूर्ण शब्दावली

- 'परिभाषा का संकट' या 'अर्थ परिभाषा का भ्रम' (Semantic Confussion) - लुसियन पाई
- 'परिभाषित प्राथमिकताओं की समस्या' (Problem of Definitional Priorities) जे.बी. नेटल (Nettle)
- 'विकास संलक्षण' (Development Syndrom) - लुसियन पाई
- भूमिका विभिन्नीकरण व संस्कृति का लौकिकीकरण - आमण्ड
- विकास फन्दा - एफ. डब्ल्यू. रिग्स
- राजनीतिक विकास का द्वंद्वात्मक सिद्धांत - एफ. डब्ल्यू. रिग्स
- Breakdown - आइजस्टैंड
- Political Decay - हण्टिंगटन
- Gap Hypothesis (गैप परिकल्पना) हण्टिंगटन

- रिचर्ड सिसन (Richard Sisson) - The Congress Party in Rajasthan : Political Integration and Institution Building in an Indian State (1972)

